Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

قُلْ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ
اِنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ جَمِيْعًا
الَّذِيْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ
لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ

(आले इमरान : 9)

अनुवाद : तू कह दे कि हे इनसानो निसंदेह मैं तुम सबकी तरफ़ अल्लाह का रसूल हूँ जिसके क़बज़ा में आसमानों और ज़मीन की बादशाही है। उसके सिवा और कोई माबूद नहीं। वह ज़िंदा भी करता है और मारता भी है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْدِ

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष- 7
अंक- 42

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

मूल्य 600 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

23 रबीउल अव्वल 1444 हिज्री कमरी, 20 इखा 1401 हिज्री शम्सी, 20 अक्टूबर 2022 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

तीन व्यक्ति जिन से अल्लाह क़ियामत के दिन झगड़ा करेगा

(2227) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला फ़रमाता है : तीन शख़्स हैं जिनसे क़ियामत के रोज़ मैं झगड़ा करूँगा। एक वह शख़्स जिसने मेरा नाम लेकर किसी से अह्द किया और फिर ग़द्दारी की। दूसरा वह शख़्स जिसने किसी आज़ाद को बेच कर उसकी क़ीमत खाई। तीसरा वह व्यक्ति जिसने मज़दूर को मज़दूरी पर रखा और उससे पूरा काम लिया परन्तु उसकी मज़दूरी उसे नहीं दी।

कौन सा पड़ोसी ज़्यादा हक़दार है

(2259) हज़रत आईशा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि उन्होंने कहा! हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ! मेरे दो पड़ोसी हैं इन दोनों में से मैं किस को भेंट भेजूँ? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : उन दोनों में से जिसका दरवाज़ा तुमसे ज़्यादा क़रीब है।

काम की ख़ाहिश रखने वाले या ओहदा मांगने वाले

(2261) हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि मैं (यमन से नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) के पास हाज़िर हुआ और मेरे साथ अशअर क़बीले के दो शख़्स थे (जो किसी ख़िदमत के तलबगार थे, उन्होंने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से उसकी दरख़ास्त की)मैं ने अर्ज़ किया : मुझे इलम नहीं था कि ये दोनों काम की ख़ाहिश रखते हैं। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : हम ऐसे लोगों को अपने काम पर नहीं लगाते जो इसकी ख़ाहिश रखते हों (रावी कहता कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने कलाम करते हुए) لَنْ نَسْتَعْمِلَ فرمایا لَا نَسْتَعْمِلُ फ़रमाया।

(बुख़ारी,भाग 4 प्रकाशन 2008 क़ादियान)

सही और सच्ची बात वही है जो ख़ुदा तआला ने हम पर खोली,जो अहादीस के उदेश्य के अनुसार है कि मसीह कोई ख़ूनी जंग नहीं करेगा और न तलवार पकड़ कर लड़ना उसका उदेश्य है बल्कि वह तो इस्लाह के लिए आएगा, हाँ यह हम मानते हैं कि उसका काम शर का अंत करना है और वह तर्कों और प्रमाणों से करेगा

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश

बैरूनी तौर पर मसीह का काम क्या है? जो उसका यह नाम रखा। मसीह इबन-ए-मरियम का काम शर का अंत करना होगा और मह्दी का काम ख़ैर का कमाना। इसलिए ग़ौर करो कि मसीह का काम يَقْتُلُ الْخِنْزِيْرَ और يَكْسِرُ الصَّلِيْبَ बताया है। यही दिफ़ाई शर है, लेकिन हमारा यह मज़हब हरगिज़ नहीं है कि वह दिफ़ाइ शर के लिए तलवार और तीर लेकर जंग के वास्ते निकलेगा।

ओल्मा जो ये कहते हैं कि वह जंग करेगा यह सही नहीं बल्कि बिल्कुल ग़लत है। यह क्या इस्लाह हुई कि अभी आप आए और आते ही तलवार पकड़ कर लड़ाई के वास्ते मैदान में निकल आए, यह नहीं हो सकता। सही और सच्ची बात वही है जो ख़ुदा तआला ने हम पर खोली,जो अहादीस के मंशा के अनुसार है कि मसीह कोई ख़ूनी जंग नहीं करेगा और न तलवार पकड़ कर लड़ना उसका उद्देश्य है बल्कि वह तो इस्लाह के लिए आएगा। हाँ यह हम मानते हैं कि उसका काम शर का अंत करना है और वह तर्कों और प्रमाणों से करेगा।

और मह्दी का काम ख़ैर कमाना हैं यह नहीं जो बद आदात और फ़िस्क़ ओ फजूर फैला होगा, वह उसको हिदायत से बदल देगा। ईसा का शब्द अवस से लिया है जो दफ़ ए शर की तरफ़ ईमा है। इन हर दो बरुज़ों में रहस्य यह है कि मह्दी का बरूज़ पूर्ण है, क्योंकि उसका काम है फैज़ पहुँचाना और फैज़ पहुँचाना शर के अंत करने की निसबत अकमल बात है। एक शख़्स है जो किसी की राह से सिर्फ कांटे उठावे, यह बे-शक बड़ा काम है, लेकिन जो उसको सवारी दे और अपने घर ले जाकर रोटी भी खिलाए यह उससे भी बढ़कर है। अतः मह्दी अकमल है इस लिए वह अल्लाह का ख़लीफ़ा है। ईसा इबन-ए-मरियम जो मह्दी अल्लाह के ख़लीफ़ा की बैअत करेगा, उस में यही रहस्य है और मह्दी का बरूज़ इस प्रकार भी पूर्ण है कि वह दरअसल रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का बरूज़ होगा और आप ख़ातमुल अम्बिया थे और अकमलुल अम्बिया इस लिए कि उसका बरूज़ भी अकमल ही होगा।

ये दो बरूज़ थे। उल्मा ने कैसा ज़ुलम किया कि एक बरूज़ को तो उन्होंने मान लिया कि मह्दी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़ुलक और नाम पर होगा, लेकिन ईसा इब्ने मरयम की निसबत यही तजवीज़ किया कि वही आसमान से उतर कर आएगा। किस क़दर ताज्जुब की बात है कि कैसे ज़हन परिवर्तित हो गए हैं जो तनाक़ुज़ पैदा करते हैं और नहीं समझते। एक जगह तो बरोज़ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का मान लिया, उसका क़ायम मक़ाम ख़लीफ़तुल्लाह बन गया, परन्तु फिर यह क्या हुआ कि जो छोटा था उसे ख़ुद क्यों आना पड़ा। वह मह्दी जिसको इफ़ाज़ा ख़ैर दिया गया है और जो अकमल है उसको बरूज़ी रंग में लाते और मसीह इबन-ए-मरियम को उसकी बैअत कराने के वास्ते ख़ुद उतारते हो। (मल्-फ़ूज़ात, भाग प्रथम, पृष्ठ 407 प्रकाशन क़ादियान 2018 ई.)

★ ★ ★

मोमिन की औलाद अगर मोमिन होगी तो जन्नत में अपने माँ बाप के साथ मिला दी जाएगी औलाद की तकालीफ़ का माँ बाप पर-असर पड़ता है, इस तकलीफ़ से बचाने के लिए अल्लाह तआला बुज़ुर्गों की औलाद से नेकी का सुलूक करता है

नबियों और सालेहीन की जमाअतों के लिए बार-बार क़ुरआन-ए-करीम में वादे हैं कि उन पर विशेष फ़ज़ल होगा ता उनके दुख पाने से नबियों और सालेहीन को तकलीफ़ न हो

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु सूरः नहल आयत 120 ثُمَّ اِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِيْنَ عَمِلُوا السُّوْٓءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابُوْا مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ وَاَصْلَحُوْٓا ۙ اِنَّ رَبَّكَ مِنْۢ بَعْدِهَا لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ (अनुवाद : फिर (याद रखो) जिन लोगों ने बे-ख़बरी की हालत में (कोई बुराई की हो (और) फिर इसके बाद उससे तौबा कर लें और (अपनी ग़लती की) इस्लाह (भी) करें उनके हक़ में तेरा रब उन (शरायत के पूरा करने) के बाद बहुत ही बख़शने वाला (और) बार-बार रहम करने वाला (साबित होगा) की तफ़सीर में फ़रमाते हैं :

इस से पूर्व अल्लाह तआला ने वर्णन फ़रमाया था कि यहूद ने ना-फ़रमानी की इस लिए उन पर तकालीफ़ आईं जैसे कि फ़रमाया وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ वे ज़ुलम करते थे इस लिए इसका नतीजा उन्हें दुख मिला। अब फ़रमाया है कि जबकि यहूद ने ग़लतियां कीं लेकिन अगर वह अब भी तौबा करें तो ख़ुदा तआला को बख़शने वाला मेहरबान पाएँगे। इस में यहूद का कोई ख़ास लिहाज़

शेष पृष्ठ 12 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - **निगरान बदर बोर्ड क़ादियान**

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की जर्मन यात्रा जून 2014 ई. (भाग-10)

(रिपोर्टः अब्दुल माजिद ताहिर साहब, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादकः सय्यद मुहयुद्दीन फ़रीद)

12 जून 2014 शुक्रवार के दिन

जलसा सालाना के इंतेज़ामात का निरीक्षण

(शेष रिपोर्ट)

लजना के जलसा गाह और इंतेज़ामात के निरीक्षण के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ पुरुषों के जलसा गाह में तशरीफ़ ले आए। जहां प्रोग्राम के अनुसार जलसा सालाना की डयूटियों का उद्घाटन समारोह था।

जलसा सालाना जर्मनी के समस्त इंतेज़ामात के लिए अफ़्सर जलसा सालाना , अफ़्सर जलसा गाह और अफ़्सर ख़िदमत-ए-ख़लक़ के साथ 21 नायब आफ़सरान जलसा हैं। 167 की संख्या में नाज़ेमीन जलसा हैं और 486 नायब नाज़िमीन हैं। जब कि मुआवेनीन की कुल संख्या 4970 है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ स्टेज पर पधारे और जलसा सालाना के उद्घाटन समारोह का आरंभ तिलावत क़ुरआन-ए-करीम से हुआ जो आदरणीय शेख़ मुनीर अहमद साहब ने प्रस्तुत की और इसका उर्दू भाषा में अनुवाद प्रस्तुत किया इसके बाद मुहम्मद हम्माद मीटर साहब ने इस का जर्मन भाषा में अनुवाद किया।

भाषण हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़

इसके बाद नौ बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने भाषण फ़रमाया :

तशह्हुद और ताव्वुज़ के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

इन शा अल्लाह तआला कल से जमाअत अहमदिया जर्मनी का जलसा सालाना शुरू हो रहा हैऔर जलसा के लिए जो इंतेज़ामात किए जाते हैं उनको आज आख़िरी शक्ल देकर हसब-ए-रिवायत आज उसका निरीक्षण करवाया गया है। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से जमाअत अहमदिया जर्मनी के बारे में अब यह आशा नहीं की जा सकती कि यहां इंतेज़ामात में कोई ख़ामी इस लिए हो कि आप को पता नहीं। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से बड़े अनुभवी कार्यकर्ता मयस्सर हैं। हाँ यदि कोई ख़ामी हो सकती है तो इस इंसानी तक़ाज़ा के कारण से हो सकती है या इस कारण से हो सकती है कि हमें अब पर्याप्त अनुवभ हो गया है इस लिए प्रत्येक बात को मामूली समझ कर लिया जाए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

हमारे डयूटी देने वाले कार्यकर्ताओं को यह याद रखना चाहिए कि जहां वह ज़रा सा भी relax हुए या किसी काम को मामूली समझा वहां काम में फिर बरकत नहीं रहती। इस लिए समस्त नाज़ेमीन, नायबीन और दूसरे कार्यकर्ता अपनी प्रत्येक ज़िम्मेदारी और प्रत्येक डयूटी को जो विभिन्न विभागों में लगाई गई है इस को बड़ा महत्वपूर्ण समझ कर अदा करें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

पिछली दो तीन वर्षों से यह हो रहा है कि पाकिस्तान से आने वाले असायलम सीकरज़ की संख्या पर्याप्त ज़्यादा है और उनकी भी डयूटी लगी हुई परन्तु उनको अनुवभ भी नहीं है इस लिए यहां जो उनके आफ़सरान हैं या साथी कार्यकर्ता हैं उनसे अनुवभ प्राप्त करने की प्रयास करें। 30 वर्ष हो गए हैं कि पाकिस्तान में जलसे नहीं होते। इस लिए एक लंबा अरसा के Gap के कारण से उन्हें अनुवभ नहीं रहा और जलसे का यह काम बड़ा बड़े काम होते हैं। इस लिए प्रत्येक कार्यकर्ता अपने काम को बहुत महत्वपूर्ण समझ कर अपने कर्तव्य अदा करने का प्रयास करे। केवल इस बात पर न रहें कि हमें अनुवभ है और आख़री समय में कर लेंगे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

सदैव निरंतरता से काम करें। बाक़ायदगी से काम करें। अपने कर्तव्य अदा करें और फिर आपके कामों में उस समय तक बरकत नहीं होगी जब तक अल्लाह तआला से सम्बन्ध पैदा नहीं होगा और इस की आरजू नहीं होगा। इस लिए अपनी नमाज़ों को हमेशा समय पर अदा करने का प्रयास करें और अपनी भाषाओं को दुआओं से तर रखें ताकि यहां का माहौल है इस में मज़ीद रूहानियत पैदा हो और इस रूहानियत का प्रभाव आपके शरीरों पर भी प्रकट हो रहा हो, आपकी भाषाओं पर भी प्रकट हो रहा हो और आप के ज़हनों पर भी प्रकट हो रहा हो

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

अतः यह बहुत महत्वपूर्ण चीज़ है। इस को हमेशा याद रखना चाहिए कि हमारा काम असल में तो दुआ के कारण से होता है। इतना बड़ा प्रबन्ध है। बाहर से लोग आते हैं। देखते हैं तो हैरान रह जाते हैं और जब उनको बताओ कि यह कोई उद्यमी या विभिन्न विभाग जात में काम करने वाले किसी विशेष हुनर के माहिर नहीं हैं बल्कि सब Volunteer हैं तो उनकी हैरत की इंतेहा नहीं रहती। अतः यह अल्लाह तआला का फ़ज़ल है जो हम पर है जो जमाअत अहमदिया पर है। इस फ़ज़ल को मज़ीद प्राप्त करने के लिए दुआओं की बहुत आवश्यकता है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

इसी तरह जो संसार के हालात हैं इस कारण से प्रत्येक विभाग के कार्यकर्ता को और संपूर्णता प्रत्येक अहमदी को अपने इर्द-गिर्द के माहौल पर नज़र रखनी चाहिए कि कोई ऐसा अंसर हमारे मध्य में न हो जो किसी भी तरह, किसी भी सूरत में किसी काम में ख़राबी या हर्फ़ डालने का प्रयास न करे। अतः इन बातों को याद रखें अल्लाह तआला आप को तौफ़ीक़ दे कि आप उत्तम रूप में अपने कर्तव्य अंजाम देने वाले हों।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का यह भाषण नौ बजकर पाँच मिनट तक जारी रहा। इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने दुआ करवाई उसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ कुछ देर के लिए अपनी रहने के स्थान पर तशरीफ़ ले गए। नौ बजकर 45 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने पधार कर नमाज़ मग़रिब-ओ-इशा जमा करके पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने रहने के स्थान पर तशरीफ़ ले गए।

जलसा सालाना के तीन अय्याम में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की रिहाइश जलसा गाह के इस बड़े-ओ-अरीज़ कम्पलेकस के एक हिस्सा में है।

13 जून 2014 शुक्रवार के दिन

जलसा सालाना जर्मनी का पहला दिन

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने सुबह चार बजकर 20 मिनट पर पुरुषों के जलसा गाह में पधार कर नमाज़-ए-फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने रहने के स्थान पर तशरीफ़ ले गए।

सुबह हुज़ूर अनवर ने दफ़्तरी डाक देखी और विभिन्न प्रकार के दफ़्तरी मामलों सरअंजाम दिए।

आज अल्लाह तआला के फ़ज़ल से जमाअत अहमदिया जर्मनी के 39वें जलसा सालाना का पहला रोज़ था।

मध्याह्न एक बजकर 55 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी रहने के स्थान से बाहर पधारे और झंडा लहराने के समारोह के लिए जलसा गाह के चारों हालों के मध्य एक खुले लॉन में तशरीफ़ ले गए। जहां हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने लिवा-ए-अहमदियत लहराया। जबकि अमीर साहब जर्मनी ने जर्मनी का राष्ट्रीय झंडा लहराया। लिवाए अहमदियत लहराने के समय जमाअत के लोग ربنا تقبل منا انك انت السميع العليم की दुआ पढ़ते रहे।

ख़ुतबा जुमा हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ :

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ पुरुषों के जलसा गाह में पधारे और ख़ुतबा जुमा इरशाद फ़रमाया जिसके साथ इस जलसा का उद्घाटन हुआ।

तशह्हुद, ताव्वुज़ और सूरत फ़ातिहा की तिलावत के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

शेष पृष्ठ 8 पर

ख़ुत्बः जुमअः

“पैग़ंबर-ए-ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की निसबत फ़रमाया कि अगर कोई चाहे कि मुर्दा मय्यत को ज़मीन पर चलता हुआ देखे तो वह अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को देखे और अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो का दर्जा उस केज़ाहिरी आमाल से ही नहीं बल्कि इस बात से है जो उस के दिल में है।” (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के महान ख़लीफ़ा राशिद हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो के कुछ कारनामों, प्राथमिकताएं और उच्च श्रेणी का कार्यों का ईमान अफ़रोज़ वर्णन

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो’मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 16 सितम्बर 2022 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो के ज़माने के कारनामों का वर्णन हो रहा था। इस विषय में ज़िम्मियों के हुक़ूक़ के बारे में कुछ तफ़सील है। ज़िम्मी वे लोग थे जो इस्लामी हुकूमत की इताअत क़बूल करके अपने मज़हब पर क़ायम रहे और इस्लामी हुकूमत ने उनकी हिफ़ाज़त का ज़िम्मा लिया। ये लोग मुस्लमानों के बरअक्स फ़ौजी ख़िदमत से बरी थे और ज़कात भी उन पर आयद नहीं होती थी। इसलिए उनके जान-ओ-माल और दूसरे इन्सानी हुक़ूक़ की हिफ़ाज़त के बदले उनसे एक मामूली टैक्स वसूल किया जाता था जिसे आम भाषा में जीज़या कहते हैं। उसकी मिक़दार सिर्फ चार दिरहम फी कस सालाना थी और ये सिर्फ़ बालिग़, तंदरुस्त और कार्य करने वाले लोगों से वसूल किया जाता था। बूढ़े, विकलांग, ग़रीब, मोहताज और बच्चे इस से बरी थे बल्कि माज़ूरों, मोहताजों को इस्लामी बैतुल माल से सहायता दी जाती थी। इराक़ और शाम की फ़ुतूहात के दौरान में असंख्य क़बायल और आबादियां जीज़या की बुनियाद पर इस्लामी प्रजा बन गए। उनसे जो समझोते हुए उनमें इस किस्म की पक्ष भी रखे गए कि उनकी उपासना स्थल से संबंधित धर्म गुरुओं के निवास स्थान और गिरजे नष्ट नहीं किए जाऐंगे और न उनका कोई ऐसा क़िला गिराया जाएगा जिसमें वे ज़रूरत के वक़्त दुश्मनों के मुक़ाबले में क़िला बंद होते हों। नाक़ूस बजाने की मनाही नहीं होगी और न तहवार के अवसर पर सलीब निकालने से रोके जाऐंगे।

(अशरा मुबशरा अज़ बशीर साजिद, पृष्ठ 183 बदर पब्लिकेशन लाहौर 2000 ई.) अर्थात वे सलीब का जलूस भी निकाल सकते हैं।

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के ख़िलाफ़त के समय में हीरा वालों के साथ हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हो ने जो मुआहिदा सुलह का किया था इस में दूसरी बातों के इलावा ये भी अह्द किया गया था कि ऐसा बूढ़ा आदमी जो काम से माज़ूर हो जाए या उस पर कोई मर्ज़ या मुसीबत आन पड़े या जो पहले मालदार हो और फिर ऐसा ग़रीब हो जाए कि उसके हममज़हब उसे ख़ैरात देने लगें तो उसके सिर से जीज़या साक़ित कर दिया जाएगा अर्थात ख़त्म कर दिया जाएगा और जब तक वह दारुल हिजरत और दारुल इस्लाम में रहेगा, जहां इस्लामी हुकूमत है वहां रहेगा उसके और उसके परिवार के मसारिफ़ मुस्लमानों के बैत-उल-माल से पूरे किए जाऐंगे। जबकि अगर ऐसे लोग दारुल हिजरत और दारुल इस्लाम छोड़कर बाहर चले जाएं, दूसरे मुल्कों में चले जाएं तो उनके परिवार की कफ़ालत मुस्लमानों के ज़िम्मा नहीं होगी।

(किताब الخراج لابی یوسف فصل فی الکنائس والبیع, पृष्ठ 148 प्रकाशन अल्मक्तबा तोफीकिया 2013 ई.)

एक रिवायत के मुताबिक़ अहल-ए-हीरा के साथ हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हो के मुआहिदा में दर्ज था कि मुहताजों, अपाहिजों और दुनिया छोड़ने वाले राहिबों को जीज़या माफ़ होगा।

(अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो अज़ मुहम्मद हुसैन हैकल अनुवादक, पृष्ठ 318 मतबूआ इस्लामी कुतुब ख़ाना लाहौर)

फिर एक इकठ्ठा करने का क़ुरआन का बहुत बड़ा काम है जो हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो के ज़माना में हुआ। जमा क़ुरआन हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो के समय का बेमिसाल और महान कारनामा है। इस की पृष्ठभूमि मुसैलमा कज़्ज़ाब से होने वाली जंग यमामा से जुड़ी है। जंग-ए-यमामा में बारह सौ मुस्लमान शहीद हो गए और उनमें किबार सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो और क़ुरआन के हुफ्फाज़ की भी एक वाज़िह अक्सरियत थी और एक रिवायत के मुताबिक़ हुफ़्फ़ाज़ शुहदा की तादाद सात सौ तक वर्णन हुई है।

(हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो अज़ मुहम्मद हुसैन हैकल, अनुवादक अंजुम शहबाज़ पृष्ठ 393 बुक कॉर्नर जेहलम पाकिस्तान)(क़ुरआन कैसे जमा हुआ? अज़ मौलाना मुहम्मद अहमद, पृष्ठ 58 मुद्रित आला हज़रत लाहौर)

इसलिए इस सूरत-ए-हाल में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को अल्लाह तआला ने क़ुरआन-ए-करीम को एक जगह इकट्ठा करने के लिए हृदय की संतुष्टि अता फ़रमाई। आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो से इस का वर्णन किया जिसकी तफ़सील सही बुख़ारी में यूं वर्णन है : उबैद बिन सब्बाक वर्णन करते हैं कि हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हो ने बताया कि अहल-ए-यमामा से जंग के बाद हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने उन्हें बुलाया तो क्या देखता हूँ कि हज़रत उम्र बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो भी आप रज़ियल्लाहु अन्हो के पास बैठे हैं। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया उमर रज़ियल्लाहु अन्हो मेरे पास आए हैं और उन्होंने कहा है कि यमामा की जंग में क़ुरआन-ए-करीम के बहुत से हुफ़्फ़ाज़ शहीद हो गए हैं और मैं डरता हूँ कि मुख़्तलिफ़ जंगों में बहुत से क़ारी या हफ़ाज़-ए-क़ुरआन शहीद हो जाऐंगे जिसके नतीजा में क़ुरआन का बहुत सा हिस्सा ज़ाए होने का अंदेशा है। इसलिए हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा कि मेरी राय में आप रज़ियल्लाहु अन्हो जमा क़ुरआन का हुक्म दें।

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हो को फ़रमाया कि मैंने उमर रज़ियल्लाहु अन्हो से कहा है कि तो वह काम कैसे करेगा जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने नहीं किया तो उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा कि इस काम में बख़ुदा ख़ैर ही ख़ैर है। उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने यह बात मुझसे इतनी बार की कि अल्लाह तआला ने इस काम के लिए मुझे शरह सदर अता फ़र्मा दी और मेरी भी उम्र की मानिंद राय हो गई है। हज़रत ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हो कहते हैं कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया ज़ैद! निसंदेह तू एक जवान और अक़लमंद आदमी है और हम तुझे किसी इल्ज़ाम या ऐब से पाक समझते हैं। तुम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए वह्यी भी लिखा करते थे। अतः अब तुम क़ुरआन शरीफ़ को ढूंढ ढूंढ कर उसे जमा करो। हज़रत ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हो कहते हैं कि अल्लाह की क़सम! अगर वह किसी पहाड़ को एक जगह से दूसरी जगह मुंतक़िल करने की ज़िम्मेदारी मेरे सपुर्द करते तो वह मेरे लिए क़ुरआन-ए-करीम के जमा करने के हुक्म से ज़्यादा कठिन न होता। यह तो बहुत बड़ा काम था जो मेरे सपुर्द किया। मैंने अर्ज़ क्या आप लोग वह काम कैसे करेंगे जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने नहीं किया।

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया बख़ुदा! यह काम सरासर ख़ैर है। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने इतनी बार यह बात दुहराई कि अल्लाह तआला ने मुझे इस काम के लिए हृदय की संतुष्टि अता फ़र्मा दी जिसके लिए हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को हृदय की

संतुष्टि अता फ़रमाई थी। अतः मैं ने क़ुरआन-ए-करीम की तलाश शुरू कर दी और उसे ख़जूरों की शाख़ों और सफ़ैद पत्थरों और लोगों के सीनों से इकट्ठा किया। यहां तक कि सूरः तौबा का आख़िरी हिस्सा मुझे हज़रत अबू खुज़ेमा अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हो से मिला जो उन के सिवा किसी और से नहीं मिला जो यह है : لَقَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ عَزِيْزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ (तौबा : 128) यहां से लेकर सूरह तौबा के आख़िर तक। फिर क़ुरआन-ए-करीम के तहरीरी सहीफ़े हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की वफ़ात तक उन्ही के पास रहे। फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की ज़िंदगी में उनके पास रहे। इसके बाद हज़रत हफ़सा बिंत उमर रज़ियल्लाहु अन्हा के पास रहे।

(सही बुख़ारी, किताब फ़ज़ायल क़ुरआन, बाब जमा क़ुरआन, नंबर : 4986)

इमाम बगवी अपनी किताब शरह सिना में जमा क़ुरआन की अहादीस पर हाशिया लिखते हुए फ़रमाते हैं कि जिस क़ुरआन को अल्लाह तआला ने अपने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर उतारा था उसे सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हो ने मन-ओ-अन बग़ैर किसी कमी बेशी के मुकम्मल जमा कर दिया था और सहाबा किराम का क़ुरआन-ए-मजीद को जमा करने का सबब हदीस में यह वर्णन हुआ है कि पहले क़ुरआन-ए-मजीद खजूर की शाख़ों, पत्थर की सलेटों, सिलों और हुफ्फाज़ किराम के सीनों में बिखरा हुआ था। सहाबा किराम को ख़दशा हुआ कि हुफ्फाज़ किराम की शहादत से क़ुरआन-ए-मजीद का कुछ हिस्सा ज़ाए न हो जाए इसलिए वह हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की ख़िदमत में हाज़िर हुए और उन्हें क़ुरआन-ए-मजीद को एक जगह जमा करने का मश्वरा दिया। यह काम सब सहाबा किराम के इत्तिफ़ाक़ से हुआ लिहाज़ा उन्होंने क़ुरआन-ए-मजीद को बिना तक़दीम-ओ-ताख़ीर जिस तरह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सुना था ठीक-ठीक इसी तरह मुरत्तिब कर दिया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने सहाबा किराम को क़ुरआन-ए-मजीद सुनाते थे और उन्हें बिल्कुल उसी तर्तीब से क़ुरआन सिखाते थे जिस तरह ये अब हमारे सामने सहीफ़े मौजूद है। ये तर्तीब जिबराईल ने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को सिखाई थी। वह आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को हर आयत के नुज़ूल पर बताते थे कि इस आयत को अमुक सूरत में अमुक आयत के बाद लिखवाएँ।

(शरह अल् सुन्नाह, किताब फ़ज़ायल क़ुरआन, बाब जमा क़ुरआन रिवायत 1232, भाग 2 पृष्ठ 484-485 अल् मक्तबा तोफीकिया 2014 ई.)

क़ुरआन-ए-करीम के जमा करने का काम हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के दौर में हुआ। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो उसके मुताल्लिक़ वर्णन करते हैं कि अल्लाह तआला हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो पर रहमत नाज़िल फ़रमाए। वही हैं जिन्हों ने सबसे पहले क़ुरआन-ए-मजीद को किताबी सूरत में महफ़ूज़ किया था।

(मुसन्निफ़ इब्ने अबी शीबा, किताब फ़ज़ायलुल क़ुरआन, नंबर 30856 अनुवाद, भाग 8, पृष्ठ 827 मकतबा रहमानिया लाहौर)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु जमा क़ुरआन के हवाले से वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं कि "जो बात उस वक़्त तक नहीं हुई थी वह सिर्फ यह थी कि एक जिल्द में क़ुरआन शरीफ़ जमा नहीं हुआ था। जब ये पाँच सौ क़ुरआन का हाफ़िज़ लड़ाई "अर्थात जंग-ए-यमामा" में मारा गया। तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के पास गए और उन्हें जा के कहा एक लड़ाई में पाँच सौ हाफ़िज़-ए-क़ुरआन शहीद हुआ है और अभी तो बहुत सी लड़ाईयां हमारे सामने हुई हैं। अगर और हुफ़्फ़ाज़ भी शहीद हो गए तो लोगों को क़ुरआन-ए-करीम के विषय में संदेह पैदा हो जाएगा इसलिए क़ुरआन को एक जिल्द में जमा कर देना चाहिए। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने पहले तो इस बात से इन्कार किया लेकिन आख़िर आप रज़ियल्लाहु अन्हो की बात मान ली।

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हो को इस काम के लिए निर्धारित किया जो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ज़िंदगी में क़ुरआन-ए-करीम लिखा करते थे और बड़े सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो उनकी मदद के लिए निर्धारित किए।

जबकि हज़ारों सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो क़ुरआन शरीफ़ के हाफ़िज़ थे लेकिन क़ुरआन शरीफ़ के लिखते वक़्त हज़ारों सहाबा को जमा करना तो असम्भव था इस लिए हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने हुक्म दे दिया कि क़ुरआन-ए-करीम को तहरीरी नुस्ख़ों से नक़ल किया जाए और साथ ही यह एहतियात की जाए कि कम से कम दो हाफ़िज़ क़ुरआन के और भी इस की तसदीक़ करने वाले हों। इसलिए मुतफ़र्रिक़ चमड़ों और हड्डियों पर जो क़ुरआन-ए-शरीफ़ लिखा हुआ था वह एक जगह पर जमा कर दिया गया और क़ुरआन-ए-शरीफ़ के हाफ़िज़ों ने उसकी तसदीक़ की। अगर क़ुरआन-ए-शरीफ़ के मुताल्लिक़ कोई संदेह हो सकता है तो केवल रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात और उस वक़्त के दरमयानी अरसा के मुताल्लिक़ हो सकता है किन्तु क्या कोई अक़लमंद यह तस्लीम कर सकता है कि जो किताब रोज़ाना पढ़ी जाती थी और जो किताब हर रमज़ान में ऊंची आवाज़ से पढ़ कर दूसरे मुस्लमानों को हुफ़्फ़ाज़ सुनाते थे और जिस सारी की सारी किताब को हज़ारों आदमियों ने शुरू से ले कर आख़िर तक हिफ़्ज़ किया हुआ था और जो किताब जबकि एक जिल्द में इकट्ठी नहीं की गई थी लेकिन बीसियों सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो उसको लिखा करते थे और टुकड़ों की सूरत में लिखी हुई वह सारी की सारी मौजूद थी उसे एक जिल्द में जमा करने में किसी को दिक़्क़त महसूस हो सकती थी। और फिर क्या ऐसे शख़्स को दिक़्क़त हो सकती थी जो ख़ुद रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ज़माना में क़ुरआन की किताबत पर मुक़र्रर था और उसका हाफ़िज़ था और जब कि क़ुरआन रोज़ाना पढ़ा जाता था क्या यह हो सकता था कि इस जिल्द में कोई ग़लती हो जाती और बाक़ी हाफ़िज़ उसको पकड़ न लेते। अगर इस किस्म की शहादत पर संदेह किया जाए तो फिर तो दुनिया में कोई दलील बाक़ी नहीं रहती।

हक़ यह है कि दुनिया की कोई तहरीर ऐसे निरंतरता से दुनिया में क़ायम नहीं जिस निरंतरता से क़ुरआन शरीफ़ है।"

(दीबाचा तफ़सीरुल क़ुरआन, अनवारुल उलूम, भाग 20 पृष्ठ 432-433)

बाद में आप रज़ियल्लाहु अन्हो यह दलील फ़र्मा रहे हैं कि क़ुरआन-ए-करीम असली हालत में है और कोई इस में रद्द-ओ-बदल नहीं है जो एतराज़ किया जाता है कि तबदीली हुई, और यह था, और वह था। आजकल भी एतराज़ उठते हैं इस का यह जवाब है।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो एक एतराज़ का उत्तर देते हुए फ़रमाते हैं कि "एक एतराज़ यह किया जाता है कि रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ज़माना में पूरा क़ुरआन नहीं लिखा गया था। इसका जवाब यह है कि यह दरुस्त नहीं है। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वाआला वसल्लम के ज़माना में निसंदेह सारा क़ुरआन लिखा गया" था। ये जो कहते हैं नहीं लिखा गया यह ग़लत है। लिखा गया था। "जैसा कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो की रिवायत है कि जब कोई हिस्सा नाज़िल होता तो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम लिखने वालों को बुलाते और फ़रमाते उसे अमुक जगह दाख़िल करो। जब यह तारीख़ी सबूत मौजूद है तो फिर यह कहना कि क़ुरआन रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के वक़्त पूरा नहीं लिखा गया था बेवक़ूफ़ी है। रहा यह सवाल कि फिर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के ज़माना में क्यों लिखा गया इस का उत्तर यह है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ज़माना में क़ुरआन इस तरह एक जिल्द में नहीं था जिस तरह अब है। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को यह ख़्याल पैदा हुआ कि लोग यह न समझें कि क़ुरआन महफ़ूज़ नहीं। इसलिए उन्होंने इस बारे में हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो से जो अलफ़ाज़ कहे वे यह थे कि اِنِّیْ اَرٰی اَنْ تَاْمُرَ بِجَمْعِ الْقُرْاٰنِ मैं मुनासिब समझता हूँ कि आप क़ुरआन को एक किताब की शक्ल में जमा करने का हुक्म दें। यह नहीं कहा कि आप उस की किताबत करा लें। फिर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हो को बुला कर कहा कि क़ुरआन जमा करो इसलिए फ़रमाया اِجْمَعْهُ। उसे एक जगह जमा कर दो ये नहीं कहा कि उसे लिख लो। उद्देश्य अलफ़ाज़ ख़ुद बता रहे हैं कि इस वक़्त क़ुरआन के औराक़ को एक जिल्द में इकट्ठा करने का सवाल था लिखने का सवाल नहीं था।"

(फ़ज़ायलुल क़ुरआन (1)अनवारुल उलूम, भाग 10 पृष्ठ 514-515)

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के अह्द-ए-ख़िलाफ़त में क़ुरआन-ए-करीम एक जिल्द में जमा कर दिया गया और बाद में हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ
KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

अन्हो के समय में ख़िलाफ़त में मज़ीद पेश-रफ़्त यह हुई कि समस्त अरब बल्कि समस्त मुस्लिम दुनिया को एक किरात पर जमा कर दिया गया।

इसलिए हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो के दौर में क़ुरआन-ए-करीम की इशाअत के हवाले से हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के बाद हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो के ज़माने में शिकायत आई कि मुख़्तलिफ़ क़बायल के लोग मुख़्तलिफ़ किरातों के साथ क़ुरआन-ए-करीम को पढ़ते हैं और ग़ैर मुस्लिमों पर इस का बुरा असर पड़ता है, वे समझते हैं कि क़ुरआन-ए-करीम के कई नुस्ख़े हैं। इस किरात से मुराद यह है कि कोई क़बीला किसी हर्फ़ को ज़बर से पढ़ता है दूसरा ज़ेर से पढ़ता है तीसरा पेश से पढ़ता है और ये बात सिवाए अरबी के और किसी ज़बान में नहीं पाई जाती। इस लिए अरबी न जानने वाला आदमी जब ये सुनेगा तो वे समझेगा कि यह कुछ कह रहा है और वह कुछ कह रहा है हालाँकि कह वह एक ही बात रहे होंगे। अतः इस फ़ित्ना से बचाने के लिए हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो ने यह तजवीज़ फ़रमाई कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के ज़माना में जो नुस्ख़ा लिखा गया था उसकी कापियां करवाली जाएं और मुख़्तलिफ़ मुल्कों में भेज दी जाएं और हुक्म दे दिया जाए कि बस ईसी किरायत के मुताबिक़ क़ुरआन पढ़ना है और कोई किरायत नहीं पढ़नी। यह बात जो हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो ने की बिल्कुल अनुचित नहीं थी। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ज़माना में अरब लोग क़बायली ज़िंदगी बसर करते थे अर्थात हर क़बीला दूसरे क़बीला से अलग रहता था इसलिए वह अपनी अपनी बोली के आदी थे। अर्थात अपना अपना उनका बोलने का अंदाज़ था। लेकिन रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के हाथ पर जमा हो कर अरब लोग मुतमद्दिम हो गए और एक आम भाषा की बजाए अरबी ज़बान एक इलमी ज़बान बन गई। कसरत से अरब के लोग पढ़ने और लिखने के इलम से वाक़िफ़ हो गए जिसकी वजह से हर आदमी ख़ाह किसी क़बीला से ताल्लुक़ रखता था उसी सहूलत से वह शब्द अदा कर सकता था जिस तरह इलमी ज़बान में वे लफ़्ज़ बोला जाता था जो दरहक़ीक़त देश की भाषा थी। अतः कोई वजह नहीं थी कि जब सारे लोग एक इलमी ज़बान के आदी हो चुके थे उन्हें फिर भी इजाज़त दी जाती कि वह अपने क़बायली तलफ़्फ़ुज़ के साथ ही क़ुरआन शरीफ़ को पढ़ते चले जाएं और ग़ैर क़ौमों के लिए ठोकर का मूजिब बनें। इस लिए हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो ने इन हरकात के साथ क़ुरआन शरीफ़ को लिख कर जो मक्का की ज़बान के मुताबिक़ था सब मुल्कों में कापियां तक़सीम कर दीं और आइन्दा के मुताल्लिक़ हुक्म दे दिया कि सिवाए मक्की लहजा के और किसी क़बायली लहजा में क़ुरआन शरीफ़ न पढ़ा जाए। इस अमर को न समझने की वजह से यूरोप के मुसन्निफ़ और दूसरी क़ौमों के मुसन्निफ़ हमेशा यह एतराज़ करते रहते हैं कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो ने कोई नया क़ुरआन बना दिया था या उसमान ने कोई नई तबदीली क़ुरआन-ए-करीम में कर दी थी लेकिन हक़ीक़त वह है जो वर्णन की गई है।

(माख़ूज़ अज़ दीबाचा तफ़सीरुल क़ुरआन, अनवारुल उलूम भाग 20, पृष्ठ 433-434)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

"क़ुरआन निसंदेह वह्यी मोतावल्ली है और पूरे का पूरा यहां तक कि नुक़्ते और हुरूफ़ भी क़तई मुतवातिर हैं और अल्लाह ने उसे कमाल एहतेमाम के साथ फ़रिश्तों की हिफ़ाज़त में नाज़िल फ़रमाया है। फिर इसके बारे में समस्त किस्म के एहतेमाम करने में नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने कोई उपाय नहीं छोड़ा किया और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपनी आँखों के सामने एक-एक आयत जैसे (क़ुरआन) नाज़िल होता रहा लिख ने पर मुदावमत फ़रमाई।

यहां तक कि आपने उसे मुकम्मल तौर पर जमा फ़रमाया और बनफ़से नफ़ीस आयात को तर्तीब दिया और उन्हें जमा किया और नमाज़ में और नमाज़ से बाहर उसकी तिलावत पर मुदावमत फ़रमाई। यहां तक कि आप दुनिया से रहलत फ़र्मा गए और अपने रफीक-ए-आला और महबूब रब्बुल आलमीन से जा मिले।

"हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि" फिर इसके बाद ख़लीफ़ा अव्वल हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस की समस्त सूरतों को नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से सुनी हुई तर्तीब के मुताबिक़ जमा करने का एहतेमाम फ़रमाया। फिर (हज़रत) अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो के बाद अल्लाह ने ख़लीफ़ रसूल हज़रत उसमान रज़ियल्लाहु अन्हो को तौफ़ीक़ अता फ़रमाई तो आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने क़ुरैश के शब्द कोष के मुताबिक़ क़ुरआन को एक किरात पर जमा किया और उसे समस्त मुल्कों में फैला दिया।"

(हमामतुल बुश्रा, अनुवाद, पृष्ठ 101-102)

यह प्रश्न है कि सहीफ़ा सिद्दीक़ी जो हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो ने लिखवाया था, कब तक महफ़ूज़ रहा इस बारे में लिखा है कि हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हो के द्वारा जिस क़ुरआन-ए-करीम को एक जिल्द में मुरत्तिब करवाया इस को सहीफ़-ए-सिद्दीक़ी कहा जाता है। यह हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो के पास आप रज़ियल्लाहु अन्हो की वफ़ात तक रहा। इसके बाद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के पास आ गया और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने उम्मुल मोमनीन हज़रत हफ़सा रज़ियल्लाहु अन्हो के सपुर्द कर दिया और यह इरशाद फ़रमाया कि किसी शख़्स को न दिया जाए। जबकि जिसको नक़ल करना या अपना नुस्ख़ा सही करना हो वह इस से फ़ायदा उठा सकता है। इसलिए हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो ने अपने अहद-ए-ख़िलाफ़त में हज़रत हफ़सा रज़ियल्लाहु अन्हो से आरेयतन लेकर चंद नुस्ख़े नक़ल करवाए और वह नुस्ख़ा हज़रत हफ़सा को वापिस लौटा दिया। जब मरवान मदीना का हाकिम हुआ तो उसने इस नुस्ख़ा को हज़रत हफ़सा रज़ियल्लाहु अन्हो से लेना चाहा लेकिन हज़रत हफ़सा रज़ियल्लाहु अन्हो ने इन्कार कर दिया । हज़रत हफ़सा के इंतेक़ाल के बाद मरवान ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हो से लेकर उस को ज़ाए कर दिया लेकिन हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो उस को पहले महफ़ूज़ करवा चुके थे।

(सेर अल् सहाबा, भाग प्रथम, पृष्ठ 44 दारुल इशाअत कराची 2004 ई.)

फ़तह बारी, किताब फ़ज़ायल क़ुरआन, बाब जमा अल क़ुरआन .... भाग 8, पृष्ठ 636-637 1887-دار الریان للتراث القاھرہ)

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो ने सबसे पहले जो काम सरअंजाम दिए या जो कारनामे सबसे पहले उनकी ज़ात के साथ वाबस्ता हैं उन्हें अव्वालियात अबूबकर रज़ियल्लाहु अन्हो का नाम दिया गया है। मुख़्तलिफ़ बातें हैं जो उन के काम थे जो सबसे पहले उन्होंने अंजाम दिए। आप रज़ियल्लाहु अन्हो सब से पहले इस्लाम लाए। दूसरे यह कि मक्का में आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने अपने घर के सामने सबसे पहले मस्जिद बनाई। फिर तीसरा यह कि मक्का में रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हिमायत में सबसे पहले क़ुरैश ने मक्का से क़िताल किया। चौथा यह कि सबसे पहले असंख्य ग़ुलामों और बांदियों को जो इस्लाम लाने की पादाश में ज़ुलम-ओ-सितम का शिकार थे ख़रीद कर आज़ाद किया। पांचवां यह कि सबसे पहले क़ुरआन-ए-करीम को एक जिल्द में जमा किया। छठा यह कि सबसे पहले उन्होंने क़ुरआन का नाम مُصْحَف रखा। सातवाँ यह कि सबसे पहले ख़लीफ़-ए-राशिद क़रार पाए। आठवां यह कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़िंदगी में सबसे पहले अमीरुल हज्ज मुक़र्रर हुए। नवां यह कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़िंदगी में सबसे पहले नमाज़ में मुस्लमानों की इमामत की। दसवाँ यह कि इस्लाम में सबसे पहले बैतुल माल क़ायम किया। ग्यारह यह कि इस्लाम में सबसे पहले ख़लीफ़ा हैं जिनका मुस्लमानों ने वज़ीफ़ा मुक़र्रर किया। बारहवां यह कि सबसे पहले ख़लीफ़ा जिन्हों ने अपना जांनशीन नामज़द किया। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को आपने नामज़द फ़रमाया था। तेरहवां यह कि वह पहले ख़लीफ़ा हैं जिनकी बैअत-ए-ख़िलाफ़त के वक़्त उनके वालिद हज़रत अब्बू क़हाफ़ा ज़िंदा थे। चौधवां यह कि वह सबसे पहले शख़्स हैं जिन्हें इस्लाम में कोई लक़ब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अता फ़रमाया। पंद्रहवां यह कि सबसे पहले शख़्स जिनकी चार पुश्तों को शरफ़-ए-सहाबियत हासिल है। उनके वालिद सहाबी हज़रत अबू क़हाफ़ह रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ख़ुद सहाबी, उनके बेटे हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो और उनके पोते हज़रत मुहम्मद बिन अब्दुर्रहमान बिन अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ये सब सहाबा थे।

(तसदीक अज़ प्रोफ़ैसर अली मोहम्मद सिद्दीक़ी, पृष्ठ 381-382)

हदीस नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और यदि खड़े होकर संभव न हो तो बैठ कर और यदि बैठ कर भी संभव न हो तो पीठ के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो के मनाक़िब के बारे में लिखा है हुल्या मुबारक हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा के बारे में मर्वी है अर्थात उनके हवाले से बात की गई है कि उन्होंने एक अरबी शख़्स को देखा जो पैदल चल रहा था और आप उस वक़्त अपने हौदज में थीं। आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया मैंने उस शख़्स से ज़्यादा हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो से मुशाबेह कोई शख़्स नहीं देखा। रावी कहते हैं हमने कहा हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से पूछा कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो हमारे लिए हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो का हुल्या वर्णन करें तो हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने फ़रमाया कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो गोरे रंग के शख़्स थे। दुबले पुतले थे रुख़्सारों पर गोश्त कम था। कमर ज़रा ख़मीदा थी, ज़रा झुकी हुई थी कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो का ते बंद भी कमर पर नहीं रुकता था और नीचे सरक जाता था। चेहरा कम गोश्त वाला था। चेहरा ज़्यादा भरा हुआ नहीं था। आँखें अंदर की तरफ़ थीं और पेशानी बुलंद थी।(अल् तब्क़ातुल कुबरा, भाग 3 पृष्ठ 140 "अबूबकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो" ' ومن بنی تیم بن مرّۃ بن کعب, दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत)

इब्ने सीरियन कहते हैं कि मैंने हज़रत अनस बिन रज़ियल्लाहु अन्हो से पूछा कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ख़िज़ाब लगाते थे? तो उन्होंने कहा हाँ मेहंदी और क़तम से रंग लगाते थे अपने बालों पर, दाढ़ी पर। कतम एक बोटी का नाम है।

(सही मुस्लिम, किताब अल् फ़ज़ायल, बाब शीबा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, हदीस 4304 भाग 12, पृष्ठ 248-249 साथ हाशिया के, नूर फ़ाउंडेशन रब्वः)

ख़ुदा से प्रेम और ज़ोहद-ओ-तक़्वा के बारे में लिखा है कि हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत रबीया बिन जाफ़र रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को कुछ ज़मीन अता फ़रमाई। दोनों में एक दरख़्त के लिए इख़तेलाफ़ हो गया। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने बेहस के दौरान कोई सख़्त बात कह दी लेकिन बाद में इस पर नादिम हुए और कहा रबीया तुम भी मुझे कोई ऐसी सख़्त बात कह दोता कि वह उसका बदला हो जाए। जिस तरह मैंने सख़्ती से बात की तुम भी मुझे बात कह दो लेकिन हज़रत रबीआ रज़ियल्लाहु अन्हो ने इन्कार कर दिया। वे दोनों नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए सारा वाक़िया बयान किया। इस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि रबीया तुम सख़्त जवाब न दो लेकिन यह दुआ दो غَفَرَ اللّٰہُ لَکَ یَا اَبَابَکْرٍ अबू बकर अल्लाह तुमसे दरगुज़र फ़रमाए। इस पर उन्होंने ऐसा ही किया। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने यह बात जब सुनी तो इसका इस क़दर असर हुआ कि वे ज़ार-ओ-क़तार रोते हुए वापस लौटे।

(फ़तह बारी, शरह सही बुख़ारी, लेइब्ने हिज्र असकलानी, भाग 7, पृष्ठ 31 हदीस 3661 क़दीमी कुतुब ख़ाना आराम बाग़ कराची)

एक रिवायत में है कि हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो ने एक परिंदा देखा जो एक दरख़्त पर था। आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा हे परिंदे तुझे ख़ुशख़बरी हो अल्लाह की क़सम मैं चाहता हूँ कि मैं तुम्हारी मानिंद होता। तुम दरख़्त पर बैठते हो और फल खाते हो और फिर उड़ जाते हो। तुम पर कोई हिसाब होगा और न ही कोई अज़ाब।

अल्लाह की क़सम मैं चाहता हूँ कि मैं रास्ते के एक जानिब एक दरख़्त होता और ऊंट मेरे पास से गुज़रता और मुझे पकड़ता और अपने मुँह में डाल लेता और मुझे चबा डालता फिर वह मुझे जल्दी से निगल लेता फिर ऊंट मुझे मेंगनी की सूरत में बाहर निकालता और मैं इन्सान न होता।

(कंज़ुल उम्माल, भाग 12 पृष्ठ 237 किताब फ़ज़ायल, बाब फ़ज़ायल सहाबा, हदीस 35694 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु सूरत अम्बिया की आयत नंबर 41 وَیَقُوْلُ الْکَافِرُ یٰلَیْتَنِیْ کُنْتُ تُرَابًا और काफ़िर कहेगा हे काश मैं ख़ाक हो चुका होता, की तफ़सीर करते हुए वर्णन फ़रमाते हैं कि "बाअज़ मुस्लमान फ़िरक़े सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो के बुग़ज़ में इस क़दर बढ़ गए हैं कि वे कहते हैं कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो मौत के वक़्त यही फ़िक़रा कहते थे अतः उनका कुफ़्र साबित है।" अर्थात क्योंकि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो यह पढ़ा करते थे وَیَقُوْلُ الْکَافِرُ یٰلَیْتَنِیْ کُنْتُ تُرَابًا। तो इसलिए वे काफ़िर हुए नऊज़ो बिल्लाह। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं "हालाँकि अगर यह रिवायत साबित हो" अगर यह सच्ची बात है "और यह आयत हज़रत अबूबकर रज़ियल्लाहु अन्हो के मुताल्लिक़ हो तो अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के ईमान के लिहाज़ से उसके यह अर्थ होंगे कि कुफ़्फ़ार की बातों का मुनकिर अर्थात अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो कहेगा कि काश मेरे साथ ख़ुदा तआला का मुआमला ऐसा ही होता कि न वह मेरे नेक-आमाल का बदला देता और न मेरी ग़लतियों की सज़ा देता। और यह फ़िक़रा एक मोमिन-ए-कामिल का फ़िक़रा है। हदीसों में तो ख़ुद रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के मुताल्लिक़ भी आता है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम यह फ़रमाया करते थे कि मैं अपने आमाल की वजह से बख़्शा नहीं जाऊँगा बल्कि अल्लाह तआला के फ़ज़ल से बख़्शा जाऊँगा। काफ़िर का लफ़्ज़ उस जगह कटाक्ष के रूप में प्रयोग हुआ है और मुराद यह है कि ये लोग उसे काफ़िर कहते हैं जो जंग में रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सबसे ज़्यादा क़रीब होता था और जिसने अपना सारा माल रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर क़ुर्बान कर दिया था और ग्यारह साल की बेटी आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से ब्याह दी थी जबकि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की उम्र चोव्वन पचपन साल की थी और हिज्रत में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ था जबकि सारे मक्का के मुक़ाबले में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम केवल अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को साथ लेकर खड़े हो गए थे। क़ुरआन-ए-करीम तंज़न कहता है कि यह क़ुर्बानियां देने वाला शख़्स तो काफ़िर है। "अगर यह समझा जाए कि अबू बकर के मुताल्लिक़ भी यह आयत है तो यह तंज़न लफ़्ज़ प्रयोग हुआ है कि यह क़ुर्बानियां देने वाला शख़्स तो काफ़िर है" मगर वे लोग जिन्हों ने इस के आमाल के मुक़ाबला में कोई निसबत भी अमल की नहीं दिखाई वह मोमिन हैं।"

(तफ़सीर-ए- सग़ीर, सूरत अम्बिया, ज़ेर आयत 41 पृष्ठ 798 हाशिया)

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की वफ़ात का वक़्त जब क़रीब आया तो उन्होंने हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से फ़रमाया हे मेरी बेटी तू जानती है कि लोगों में सबसे ज़्यादा महबूब और अज़ीज़ मुझे तुम हो और मैंने अपनी अमुक जगह की ज़मीन तुम्हें भेंट की थी। अगर तुमने इस पर क़बज़ा क्या होता और इस के नफ़ा से लाभ उठाया होता तो वह निसंदेह तुम्हारी मिल्कियत में थी लेकिन अब वह मेरे समस्त वारिसों की मिल्कियत है। मैं पसंद करता हूँ कि तुम वह वापस लौटा दो। वह हिबा वापिस लौटा दो क्योंकि उस पर तुमने क़बज़ा नहीं किया और मेरी ज़िंदगी में वह ज़मीन मेरे प्रयोग में ही रही ताकि वह मेरी सारी औलाद में अल्लाह की किताब के मुताबिक़ तक़सीम हो जाए और मैं अपने रब से इस हालत में मिलूँ कि मैंने अपनी औलाद में से किसी को दूसरे पर फ़ज़ीलत नहीं दी होगी। इस पर हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने अर्ज़ किया आपके हुक्म की हर्फ़ बह हर्फ़ तामील की जाएगी।

(अल् तब्क़ातुल कुबरा, भाग 3 पृष्ठ 145-146 वर्णन वसीयत अबू बकर, दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत)(तारीख़ ख़ुलफ़ा अज़ अल्लामा सियूती (अनुवाद) पृष्ठ 89 प्रकाशन नफ़ीस अकैडमी कराची)

निमंलिखित जो वाक़िया मैं बयान करने लगा हूँ यह पहले भी वर्णन हो चुका है लेकिन आपके मनाक़िब के ज़िमन में भी यहां दुबारा वर्णन करता हूँ।

जब ख़िलाफ़त की रिदा आपको अल्लाह तआला ने पहनाई तो उस वक़्त का वर्णन है कि अगले दिन हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो जो कपड़े की तिजारत करते थे ख़लीफ़ा मुंतख़ब होने के बाद हसब-ए-मामूल कंधे पर कपड़ों के थान रखकर बाज़ार की तरफ़ रवाना हुए।

रास्ते में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत अबू उबैदःरज़ियल्लाहु अन्हु से मुलाक़ात हुई। उन्होंने कहा हे ख़लीफ़ा-ए-रसूल सल्लल्लाहो वसल्लम! कहाँ तशरीफ़ ले जा रहे हैं। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया बाज़ार। उन्होंने कहा आप रज़ियल्लाहु अन्हो मुसलामानों के हाकिम हैं चलिए हम आप रज़ियल्लाहु अन्हो के लिए कुछ वज़ीफ़ा मुक़र्रर कर दें। आप रज़ियल्लाहु अन्हो वापिस चलें, वज़ीफ़ा मुक़र्रर कर देंगे। तिजारत की कोई ज़रूरत नहीं।

(सीरतुल सहाबा, भाग प्रथम पृष्ठ : 77)

अल्लामा इब्न-ए-साद ने वज़ीफ़ा की तफ़सील यह वर्णन की है कि उनको दो चादरें मिलती थीं। जब वे पुरानी हो जाती थीं तो उन्हें वापस कर के दूसरी लेते थे। सफ़र के अवसर पर सवारी और ख़िलाफ़त से पहले जो ख़र्च था इसी के मुवाफ़िक़ अपने और अपने साथियों के लिए ख़र्च कर लेते थे।

(सैर सहाबा, भाग प्रथम, पृष्ठ : 82)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि "हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो समस्त आलम-ए-इस्लामी के बादशाह थे परन्तु उनको क्या मिलता था। पब्लिक के रुपया के वे मुहाफ़िज़ तो थे मगर ख़ुद इस रुपया पर कोई तसर्रुफ़ नहीं रखते थे। बे-शक हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो बड़े ताजिर थे परन्तु चूँकि उनको कसरत से यह आदत थी कि जूंही रुपया आया ख़ुदा तआला की राह में दे दिया इस लिए ऐसा संयोग हुआ कि जब रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व

सल्लम की वफ़ात हुई और आप रज़ियल्लाहु अन्हो ख़लीफ़ा हुए तो उस वक़्त आप रज़ियल्लाहु अन्हो के पास नक़द रुपया नहीं था। ख़िलाफ़त के दूसरे ही दिन आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने कपड़ों की गठड़ी उठाई और उसे बेचने के लिए चल पड़े। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो रास्ते में मिले तो पूछा क्या करने लगे हैं? उन्होंने कहा कि आख़िर मैं ने कुछ खाना तो है। अगर मैं कपड़े नहीं बैचूंगा तो खाऊंगा कहाँ से। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा यह तो नहीं हो सकता अगर आप रज़ियल्लाहु अन्हो कपड़े बेचते रहे तो ख़िलाफ़त का काम कौन करेगा? हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने उत्तर दिया कि अगर मैं यह काम नहीं करूँगा तो फिर गुज़ारा किस तरह होगा? हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो बैतूल माल से वज़ीफ़ा ले लें।

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने जवाब दिया कि मैं यह तो बर्दाश्त नहीं कर सकता, बैतुल माल पर मेरा क्या हक़ है। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा जब क़ुरआन-ए-करीम ने आज्ञा दी है कि दीनी काम करने वालों पर भी बैतुल माल का रुपया सर्फ़ हो सकता है तो आप रज़ियल्लाहु अन्हो क्यों नहीं ले सकते।

इसलिए उस के बाद बैतुल माल से उनका वज़ीफ़ा मुक़र्रर हो गया परन्तु उस वक़्त के लिहाज़ से वह वज़ीफ़ा केवल इतना था जिससे रोटी कपड़े की ज़रूरत पूरी हो सके।" (तफ़सीर-ए-कबीर, भाग 8 पृष्ठ 468)

इब्ने अबी मुलेका वर्णन करते हैं कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के हाथ से अगर लगाम छूट कर गिर जाती तो आप अपनी ऊंटनी को बिठाते और वह लगाम उठाते। उनसे कहा गया कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने हमें क्यों हुक्म नहीं दिया ता हम आप रज़ियल्लाहु अन्हो को पकड़ा देते। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते मेरे महबूब सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मुझे इस बात का हुक्म दिया था कि मैं लोगों से किसी चीज़ का सवाल न करूँ।

(मस्नद अहमद बिन हम्बल भाग 1, पृष्ठ 92 मस्नद अबी बिक्र सिद्दीक, हदीस 65 आलेमुल क़ुतुब बेरूत 1998 ई.)

इस हद तक एहतियात करते थे।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन फ़रमाते हैं कि "रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वाआला वसल्लम ने एक दफ़ा मस्जिद में कुछ लोगों की आवाज़ सुनी कि अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को हम पर कौन सी ज़्यादा फ़ज़ीलत हासिल है। जैसे नेकी के काम वे करते हैं इसी तरह नेकी के काम हम करते हैं। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वाला वसल्लम ने यह सुना तो फ़रमाया हे लोगो! अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को फ़ज़ीलत नमाज़ और रोज़ों की वजह से नहीं बल्कि उस नेकी की वजह से है जो उस के दिल में है।" (ख़ुतबात-ए-महमूद, भाग 19 पृष्ठ 765)

अर्थात जो उनके दिल में नेकी है और जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से अक़ीदत है और अल्लाह तआला का जो ख़ौफ़ है और जो ख़शीयत है वह इस मयार की है कि तब उनको तुम्हारे पर फ़ज़ीलत है और इसके मुताबिक़ फिर उनका अमल भी है। सिर्फ दिल में नहीं है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक आयत क़ुरआन की तफ़सीर वर्णन फ़रमाते हुए हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो का मुक़ाम-ओ-मर्तबा यूं वर्णन फ़रमाया है कि "अल्लाह तआला ने यहां फ़रमाया कि तू इबादत करता रह जब तक कि तुझे यकीन-ए-कामिल का मर्तबा हासिल न हो और समस्त हिजाब और ज़ुलमाती पर्दे दूर हो कर यह समझ में आ जाए कि अब मैं वह नहीं हूँ जो पहले था बल्कि अब तो नया मुल्क, नई ज़मीन, नया आसमान है और मैं भी कोई नई मख़लूक़ हूँ। यह हयात-ए-सानी वही है जिसको सूफ़ी बका के नाम से मौसूम करते हैं। जब इन्सान इस दर्जा पर पहुंच जाता है तो अल्लाह तआला की रूह का नफ़ख़ इस में होता है। मलायका का उस पर नुज़ूल होता है। यही वह राज़ है जिस पर पैग़ंबर-ए-ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत अबूबकर रज़ियल्लाहु अन्हो की निसबत फ़रमाया कि अगर कोई चाहे कि मुर्दा मय्यत को ज़मीन पर चलता हुआ देखे तो वह अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को देखे और अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो का दर्जा उसके ज़ाहिरी आमाल से ही नहीं बल्कि इस बात से है जो उस के दिल में है।"

(मल्-फ़ूज़ात, भाग 2 पृष्ठ : 98)

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि एक मर्तबा वे लोग रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ किसी सफ़र पर रवाना हुए और जब पड़ाव किया तो मुख़्तलिफ़ टोलियों में तक़सीम हो गए। कोई किसी के साथ कोई किसी के साथ। हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि मैंने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की रिफ़ाक़त में पड़ाव किया। हमारे साथ बादिया नशीनों में से एक देहाती आदमी भी था। हम बादिया नशीनों के जिस घर में ठहरे उनकी एक औरत उम्मीद से थी। इस बदवी ने इस औरत से कहा कि क्या तुम्हारी ख़ाहिश है कि तुम्हारे हाँ बेटा पैदा हो। अगर तू मुझे एक बकरी दे दे तो तुम्हारे हाँ बेटा पैदा होगा। उस औरत ने उस को बकरी दे दी। उस बदवी ने एक वज़न के कई हम क़ाफ़िया अलफ़ाज़ उसके सामने पढ़े। कोई अपना जंतर मंत्र पढ़ा उस के सामने। फिर उसने बकरी ज़िबह की और जब लोग खाने के लिए बैठे तो एक आदमी ने कहा कि क्या आपको मालूम भी है कि यह बकरी कैसी है। फिर उसने उसका सारा क़िस्सा सुनाया। किस तरह उस औरत से उसने यह कह के बकरी ली थी कि मैं उस पर दुआ पढ़ूँगा तो तुम्हारे हाँ बेटा पैदा होगा।

रावी कहते हैं कि मैंने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को देखा आप भी वहां थे, खाना खाने वालों में शामिल। आप रज़ियल्लाहु अन्हो सख़त बेज़ारी का इज़हार करते हुए अपने हलक़ में उंगलियां डाल कर उसको निकाल रहे थे।

(मस्नद अहमद बिन अहम्बल, भाग 8 पृष्ठ 19-20 मस्नद अबी सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हो, हदीस नंबर 11420 दारुल हदीस काहिरा 2012 ई.)

अर्थात उलटी करके खाना निकाल रहे थे, ऐसा खाना जो शिर्क का ज़रीया बना हो वह मैं नहीं खा सकता।

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने वर्णन फ़रमाया कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो का एक ग़ुलाम था वह उन्हें कमाई लाकर देता था और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो उस की कमाई से खाया करते थे। एक दिन वह कोई चीज़ लाया हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस से खाया। ग़ुलाम ने उनसे कहा कि क्या आप जानते हैं कि यह क्या है। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने पूछा क्या है? उसने कहा मैंने ज़माना-ए-जाहिलियत में एक शख़्स के लिए कहानत की थी और मैं कहानत का इलम अच्छी तरह नहीं जानता सिवाए उसके कि मैंने उसको धोखा दिया। वह मुझको मिला तो उस ने मुझे उस के बदले कुछ दिया था। अतः यह वह है जिससे आपने खाया है। तोहफ़ा ले आया था या पका के कभी-कभी चीज़ ले आया करता था। तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने अपना हाथ गले में दाख़िल किया और जो कुछ पेट में था सब उलटी कर दिया। (सही बुख़ारी, किताब मनाक़िब अंसार, बाब अय्याम हदीस 3842) उन्होंने कहा ऐसा हराम खाना में नहीं खा सकता।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो ग़रूर से अपना कपड़ा घसीट कर चला तो अल्लाह रोज़-ए-क़यामत उस की तरफ़ नज़र उठा कर नहीं देखेगा। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा कि मेरे कपड़े की एक तरफ़ ढीली रहती है सिवाए इसके कि मैं उस का ख़ास ख़्याल रखूं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तुम तो ग़रूर से ऐसा नहीं करते।

(सही बुख़ारी, किताब फ़ज़ायल अस्हाबुन्नबी, قول النبیﷺ لو کنت متخذًا خلیلًا, हदीस 3665)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं

"एक मर्तबा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जिन की तेहबंद नीचे को ढलकता है वह दोज़ख़ में जाऐंगे। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो यह सुनकर रो पड़े क्योंकि उनका तेहबंद भी वैसा था। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि तू उनमें से नहीं है। उद्देश्य नीयत का बहुत बड़ा दख़ल है और हिफ़्ज़-ए-मरातिब ज़रूरी वस्तु है।"

(मल्-फ़ूज़ात, भाग 7 पृष्ठ 25)

फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की कामिल इताअत और फ़रमांबर्दारी और इशक़-ए-रसूल और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए ग़ैरत का वर्णन है। एक दिन हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा घर में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से कुछ तेज़ तेज़ बोल रही थीं कि ऊपर से उनके अब्बा अर्थात हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो तशरीफ़ लाए। यह हालत देखकर उनसे रहा न गया और अपनी बेटी को मारने के लिए आगे बढ़े कि तुम ख़ुदा के रसूल के आगे इस तरह बोलती हो। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम यह देखते ही बाप बेटी के दरमयान हायल हो गए और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की मुतवक़्क़े सज़ा से हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा को बचा लिया। जब हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो चले गए तो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से मज़ाक़ किया! आज हमने तुम्हें तुम्हारे अब्बा से कैसे बचाया। कुछ दिनों के बाद हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो दुबारा तशरीफ़ लाए तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा हंसी ख़ुशी बातें कर रही थीं। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो कहने लगे

कि देखो तुमने अपनी लड़ाई में तो मुझे शरीक किया था अब ख़ुशी में भी शरीक कर लो। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हमने शरीक किया।

(सुंन अबी दाऊद, किताब فضائل اصحاب النبی ﷺ باب مناقب الحسن والحسین رضی اللہ عنہما हदीस 4999)

हज़रत उक़बा बिन हारिस रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि मैंने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को देखा उन्होंने हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हो को उठाया और वह यह कह रहे थे कि मेरा बाप तुझ पर क़ुर्बान। यह तो नबी की शक्ल-ओ-शबाहत है, अली रज़ियल्लाहु अन्हो की शक्ल-ओ-शबाहत नहीं है और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो यह सुनकर हंस रहे थे।

(बुख़ारी, किताब फ़ज़ायल अस्हाबुन्नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम बाब मनाक़िब हसन हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हो, हदीस 3750)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि जब हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो की बेटी हज़रत हफ़सा रज़ियल्लाहु अन्हो हज़रत ख़नीस बिन हुज़ाफ़ा सहमी के फ़ौत होने पर बेवा हो गईं और वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो में से थे। जंग-ए-बदर में शरीक हुए थे। मदीना में उन्होंने वफ़ात पाई थी तो हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो कहते थे मैं उसमान बिन अफ़्फ़ाँ रज़ियल्लाहु अन्हो से मिला, उनके पास हफ़सा का वर्णन किया और कहा अगर आप रज़ियल्लाहु अन्हो चाहें तो हफ़सा रज़ियल्लाहु अन्हो का निकाह आप रज़ियल्लाहु अन्हो से कर दें। उन्होंने कहा मैं इस मामले पर ग़ौर करूँगा इसलिए मैं कई रोज़ तक ठहरा रहा। फिर उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा मुझे यही मुनासिब मालूम हुआ है कि मैं इन दिनों शादी न करूँ। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो कहते थे फिर मैं हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो से मिला और कहा अगर आप रज़ियल्लाहु अन्हो चाहें तो मैं हफ़सा रज़ियल्लाहु अन्हो का निकाह आप रज़ियल्लाहु अन्हो से किए देता हूँ। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ख़ामोश हो गए और मुझे कुछ उत्तर नहीं दिया। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो कहते हैं कि उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो की निसबत मैं उनसे ज़्यादा रनजीद-ए-ख़ातिर हुआ। फिर मैं कुछ रातें ठहरा रहा इसके बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हफ़सा से निकाह का पैग़ाम भेजा और मैंने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से उनका निकाह कर दिया। फिर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो मुझसे मिले और कहा शायद आप रज़ियल्लाहु अन्हो मुझ से नाराज़ हो गए हैं। जब आपने हफ़सा रज़ियल्लाहु अन्हो का वर्णन किया और मैंने कुछ जवाब न दिया। मैंने कहा कि हाँ इस तरह ही है। तो उन्होंने कहा कि दरअसल जो बात आपने पेश की थी उस की निसबत आपको जवाब देने से नहीं रोका था परन्तु इस बात ने कि मुझे इलम हो चुका था कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हफ़सा से निकाह करना चाहते हैं और मैं ऐसा नहीं था कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का यह मंशा ज़ाहिर करता अर्थात आपको बताता कि इस तरह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का मंशा है। इसलिए मैं चुप हो गया या इन्कार कर दिया और आगे कहते हैं अगर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम इस रिश्ता को छोड़ देते तो मैं ज़रूर आप की बेटी का रिश्ता क़बूल कर लेता।

(सही बुख़ारी, किताब अलमग़ाज़ी, हदीसा 4005)

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो का हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को ख़िराज-ए-अक़ीदत पेश करना इसके बारे में लिखा है कि हज़रत इब्न-ए-अब्बासरज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि उन्होंने कहा में इन लोगों में खड़ा था जिन्हों ने हज़रत उम्र बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो की वफ़ात के बाद उन के लिए दुआ की जबकि उन्हें तख़्ते पर रख दिया गया। इतने में क्या देखता हूँ कि एक शख़्स ने मेरे पीछे से आ कर अपनी कहनी मेरे कंधे पर रख दी। कहने लगा अल्लाह तुम पर रहम करे। मुझे तो यही उम्मीद थी कि अल्लाह तुम्हें भी हमारे दोनों साथियों के साथ ही दफ़न करेगा क्योंकि मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यह फ़रमाते हुए बहुत सुना था कि मैं और अबू बकर और उमर अमुक जगह थे और मैंने और अबू बकर और उमर ने ये किया। मैं और अबू बकर और उमर चले गए। इसलिए मैं ये उम्मीद रखता था कि अल्लाह तआला तुमको भी इन दोनों के साथ ही रखेगा। मैंने जो मुड़ कर देखा तो हज़रत अली बिन अबी तालिब थे।

(सही बुख़ारी, किताब फ़ज़ायल अस्हाबुन्नबी (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम), बाब क़ौल अन्नबी(सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) لو کنت متخذا خلیلا, हदीस नंबर 3677)

बाक़ी इन शा अल्लाह आइन्दा वर्णन होगा।

★ ★ ★

पृष्ठ 02 का शेष

आज अल्लाह तआला के फ़ज़ल से जर्मनी का जलसा सालाना इस ख़ुतबा के साथ शुरू हो रहा है। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से जलसे की हाज़ेरी में प्रत्येक वर्ष बढ़ोतरी होती है। आशा है इन शा अल्लाह तआला इस वर्ष भी होगा और होना चाहिए क्योंकि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने भी बार-बार जमाअत को ध्यान दिलाया है कि समस्त अहमदियों को इस जलसा में शामिल होना चाहिए। अतः जिस तरह जमाअत की संख्या बढ़ रही है जलसे की हाज़िरी भी बढ़नी चाहिए। और इस की ख़ातिर तकलीफ़ उठाकर भी लोगों को आना चाहिए। आप लोग ख़ुश-क़िस्मत हैं कि अल्लाह तआला ने जलसे के अवसर प्रदान फ़रमाए हुए हैं। पाकिस्तान में जलसे पर पाबंदी है तो वहां के अहमदी बेचैन हो जाते हैं कि काश यह पाबंदियां ख़त्म हों तो हम भी जलसे आयोजित करें और जलसे के इन उद्देश्य को प्राप्त करने का प्रयास करें जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने वर्णन फ़रमाए हैं। हम भी इन दुआओं के प्राप्त करने वाले बनें जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जलसे में शामिल होने वालों के लिए कीं। यहां कुछ मेहमान भी पाकिस्तान से आए हुए हैं जो मुझे मिले हैं। महिलाए भी हैं और पुरुष भी हैं। रोते हुए कुछ की हिचकी बंध जाती है कि हम इन नेअमतों से वंचित हैं। यह दुआ करें कि हमें भी यह मिलें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

तो बहरहाल जैसा कि हमेशा कहता हूँ कि पाकिस्तान के अहमदियों को यदि जल्द इन मुश्किलात से निकलना है तो पहले से बढ़कर अल्लाह तआला के हुज़ूर झुकना चाहिए। अल्लाह तआला जलद फ़ज़ल के सामान पैदा फ़रमाए। ज़ालिमों के अत्याचार और दुश्मनों की मुख़ालफ़तों से हमें निजात दे। ये सब कुछ दुआओं से होना है। इसके अतिरिक्त ये चीज़ प्राप्त करने का और कोई हथियार नहीं। बहरहाल मैं आप लोगों से जो यहां रहने वाले हैं यह कह रहा था कि आप ख़ुश-क़िस्मत हैं कि अल्लाह तआला ने आप के लिए ये सामान पैदा फ़रमाए कि जलसे आयोजित करते हैं। प्रत्येक तरह के इजतेमाआत करते हैं प्रत्येक सतह पर इज्लासात आयोजित करते हैं। अतः इस बात पर अल्लाह तआला के शुक्रगुज़ार हों और शुक्रगुज़ारी यह है कि जलसे के प्रोग्रामों से भरपूर लाभ उठाएं। जलसा के दिनों में भी और फिर बाद में भी जो नेक बातें यहां देखें और सुनें उन्हें अपनी जीवन का हिस्सा बनाएँ।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जलसे का उद्देश्य सब्र के साथ दीन को तलाश करना और फ़क़त दीन को चाहना बताया है। अर्थात प्रत्येक व्यक्ति जो जलसा में शामिल होता है इस नीयत से शामिल होने के लिए आए कि थोड़ी बहुत मुश्किलात तकलीफ़ें यदि बर्दाश्त करनी भी पढ़ें तो कर लेंगे और कोई बेसबरी का कलिमा मुँह से नहीं निकालेंगे कि हम से यह व्यवहार हुआ और वह व्यवहार हुआ। अव्वल तो साधारणता यहां डयूटी देने वाले अल्लाह तआला के फ़ज़ल से अपने कर्तव्य अदा करने का प्रयास करते हैं और जिनमें कमी है उन्हें में पुनः यादेहानी करवा देता हूँ कि सब्र से और बर्दाश्त से और अल्लाह तआला की रज़ा के हुसूल के लिए अपने कर्तव्य अदा करें और साथ ही शामिल होने वालों ने जलसा से भी मैं कहूँगा कि यहां जलसा पर आना केवल इस उद्देश्य के लिए होना चाहिए कि आपने दीन सीखना है और इस माहौल में अपनी रुहानी प्रगति के सामान करने हैं और फिर उस रुहानी प्रगति में अपनी नसलों को भी शामिल करना है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इस दर्द को हमेशा महसूस करते रहें। आप फ़रमाते हैं कि :

"मैं बार-बार कहता हूँ कि आँखों को पाक करो और उनको रूहानियत के नूर से ऐसा ही रोशन करो जैसा कि वह ज़ाहिरी तौर पर रोशन हैं। "फ़रमाया" "इन्सान उस समय सूजाखा कहला सकता है जब कि बाहरी पहचान अर्थात नेक और बद की पहचान करना का उसको हिस्सा मिले और फिर नेकी की ओर झुक जाए। फ़रमाया : "नजात उन्ही को है कि जो संसार की भावनाओं से बेज़ार और बुरी और साफ़-दिल थे।" फ़रमाया कि "जब तक दिल फ़िरोतनी का सजदा न करे केवल ज़ाहिरी सज्दों पर-आशा रखना व्यर्थ का काम है। जैसा कि क़ुर्बानियों का ख़ून और गोश्त ख़ुदा तक नहीं पहुंचता केवल तक़्वा पहुँचता है। ऐसा ही जस्मानी रुकू-और-सुजूद भी व्यर्थ है जब तक दिल का रुकू और सुजूद का कयाम न हो।" फ़रमाया कि "दिल का क़ियाम यह है कि इसके आदेशों पर क़ायम हो और रुकू यह कि इस की ओर झुके और सुजूद यह कि इसके लिए अपने व्यक्तित्व से दस्त-बरदार हों।"

फिर आपने यह भी दुआ दी कि "ख़ुदा तआला मेरी इस जमाअत के दिलों को पाक करे और अपनी रहमत का हाथ लंबा करके उनके दिल अपनी ओर फेर दे"

(शहादतुल क़ुरआन, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 6 पृष्ठ 397-398)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

अतः यह हृदय की भावनाएं हैं यह दर्द है यह दुआएं हैं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की हमारे अनुकरणी की इस्लाह के लिए और उन जलसों का उद्देश्य भी यही अनुकरण करने की इस्लाह है। हमें अल्लाह तआला ने यह अवसर अता

फ़रमाया है कि इन तीन दिनों में अपने अनुकरण की इस्लाह के जायज़े भी लेते रहें और इस ओर ध्यान भी दें। यह मयार हमारे उस समय क़ायम होंगे जब हम एक फ़िक्र के साथ उस का प्रयास करेंगे। आप अलैहिस्सलाम का एक-एक फ़िक़रा और एक-एक शब्द दर्द अंगेज़ और हमें हिला देने वाला है।

फ़रमाया अपनी रुहानी आँखों को इस तरह रोशन करो जिस तरह तुम्हारी ये माद्दी आँखें रोशन हैं। हमारी आँखों को ज़रा सी तकलीफ़ पहुंचे हमें बेचैन कर देती है। तुरंत डाक्टर के पास जाते हैं। आँखों की ज़रा सी धुंदलाहट हमें परेशान करती है। इसके लिए हम कितना तरद्दुद करते हैं। प्रत्येक ऐसी चीज़ से अपनी आँखों को बचाने का प्रयास करते हैं जो हमारी नज़र पर-असर डालने वाली हो। बुरा प्रभाव डालने वाली हो। क्या यही प्रयास हम अपनी रुहानी आँख की रोशनी और इसको सेहत मंद रखने के लिए करते हैं? इन तीन दिनों में यदि हम ध्यान भी दे रहे हूँ तो बाहर जाकर हम फिर उसके बाद हम ऐसे कामों में ग्रस्त होजाते हैं जो हमारी रूहानियत पर मनफ़ी प्रभाव डालती है। अतः रुहानी आँख की रोशनी कुछ दिनों की बात नहीं बल्कि ये तीन दिन तो इस रोशनी के क़ायम रखने के लिए ईलाज के तौर पर हैं। यदि इस ईलाज के बाद फिर बे एहतियाती होगी तो रुहानी आँख की रोशनी प्रभावित होगी। इस लिए आपने फ़रमाया कि हक़ीक़ी सूजाखा वही है जो नेक और बद में पहचान करने वाला हो और फिर जब पहचान हो जाए तो नेकी की ओर झुक जाए। फिर वह नेकियां सरज़द हूँ जिनके करने का अल्लाह तआला ने आदेश दिया है। और उन नेकियों में जहां ख़ुदा तआला की इबादत है वहां ख़ुदा तआला की मख़लूक़ का हक़ है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

अतः जलसा पर आने वाले जैसा कि मैंने पहले भी कहा इन दिनों में अपने जायज़े ले देखें कि किस हद तक हम वह मयार प्राप्त करने की प्रयास कर रहे हैं जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हम से चाहते हैं। जलसा के दिनों में यह माहौल अल्लाह तआला ने मयस्सर फ़रमाया है कि हुक़ूकुल्लाह और हुक़ूकुल ईबाद दोनों की अदायगी के अनुकरण में प्रकटन हो सकते हैं और फिर इन अनुकरणी करने के इज़हारों को जीवन का सदैव हिस्सा बनाने का प्रयास हो। इन शा अल्लाह तआला इस महीना के आख़िर में रमज़ान का महीना भी शुरू हो रहा है जो अनुकरणी करना का तर्बीयत का महीना है। यदि इन दिनों की बरकतों को रमज़ानुल मुबारक की अज़ीम बरकतों से जोड़ने का प्रयास करें तो एक रुहानी इन्क़िलाब हम में पैदा हो सकता है। और यदि इस नीयत से जलसे पर नहीं आए या ये दिन कोई बदलाव पैदा करने वाले ना बन सके या उनके लिए प्रयास नहीं किया तो इस जलसे पर आना न आना एक जैसा है बल्कि कई दफ़ा नुक़्सान का कारण भी बन जाता है। एक मजमा ठोकर का कारण भी बन सकता है।

हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के इस ख़ुतबा जुमा का मुकम्मल मतन अख़बार बदर 17 जुलाई 2014 में प्रकाशित हो चुका है।

हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का यह ख़ुतबा जुमा मध्याह्न तीन बजकर पाँच मिनट तक जारी रहा

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने नमाज़-ए-जुमा के साथ नमाज़-ए-अस्र जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अपनी रहने के स्थान पर तशरीफ़ ले गए।

हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का यह ख़ुतबा जुमा एम.टी.ए. इंटरनैशनल पर लाईव प्रसारित हुआ। और स्थानीय तौर पर निमंलिखित ग्यारह भाषाओं में इस का अनुवाद हुआ।

अंग्रेज़ी, अरबी, फ़्रैंच, बंगला, जर्मन, फ़ारसी, तुर्की, बुल्गारियन, बूज़नीन, अल्बानियन, और रशियन।

इसके अतिरिक्त अरबी, फ़्रैंच और बंगला के अनुवाद यहां से सीधा एम.टी.ए. पर लाईव प्रसारित हुए।

इसके अतिरिक्त रेडियो पर भी जलसा की कार्यवाही उर्दू और जर्मन भाषा में प्रसारित होती रही।

पिछले-पहर भी हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दफ़्तरी मामलों के निवारण में व्यस्त रहे।

प्रोग्राम के अनुसार आठ बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने दफ़्तर पधारेऔर बाहरी देशों से आने वाले मेहमानों और वफ़ूद की मुलाक़ातें हुईं।

बाहरी देशों से आने वाले मेहमानों की हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात :

सबसे पहले देश बुल्ग़ारिया से आने वाले एक वकील Ivan Gruikin साहब ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। बुल्ग़ारिया में जमाअत की रजिस्ट्रेशन का मामले इस समय यूरोपीयन कोर्ट में है और वह जमाअत की ओर से इस केस की पैरवी कर रहे हैं।

उन्हों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की सेवा में कहा कि वह यहां जलसा में आकर बेहद ख़ुश हुए हैं और यहां उन्होंने आपस में भाई चारा और मुहब्बत और अखुवत का प्रदर्शन देखा है। कहने लगे कि मैंने प्रत्येक चेहरे को मुस्कुराते हुए देखा है। हुज़ूर अनवर का ख़ुतबा जुमा भी सुना है और बहुत प्रभावित हूँ।

बुल्ग़ारिया के मौजूदा हालात के हवाला से हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने उनसे विभिन्न मामलों पर बातचीत फ़रमाई। उनहों ने बताया कि बुल्ग़ारिया में जबकि मुस्लमानों की संख्या दस 12 प्रतिशत है परन्तु चूँकि हुकूमत Coalition से बनी हुई है इस लिए जो मुफ़्ती इत्यादि हैं उनका ज़ोर है। उन्होंने कहा कि जमाअत की रजिस्ट्रेशन के हवाले से मैं आशा रखता हूँ। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया क़ानूनी कार्यवाही जहां तक हो सके हम करेंगे और आख़िर तक जाऐंगे। हुज़ूर अनवर ने वकील का शुक्रिया अदा किया।

यह मुलाक़ात आठ बजकर पंद्रह मिनट तक जारी रही। अंत में उन्हों ने हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीर खिचवाने का सोभाग्य पाया।

इसके बाद क्रोशिया और एस्टोनिया Estonia के देशों से आने वाले वफ़ूद ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ मुलाक़ात का सौभाग्य प्राप्त किया।

क्रोशिया से इस वर्ष चार लोग पर आधारित दल आया था उनमें से एक साहब विभाग ज़राअत से सम्बंधित हैं और अपने क्षेत्र में सोशल वेलफ़्र के लिए कम्यूनिटी लीडर हैं जबकि बाक़ी तीनों महिलाओं यूनीवर्सिटी में क़ानून और पब्लिक रेलेशन्ज़ की अंग्रेज़ी भाषा में मास्टर्ज़ की डिग्री कर रही हैं।

मुलाक़ात के मध्य इन विद्यार्थियों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से प्रश्न किए और ये प्रश्न -ओ-उत्तर का सिलसिला आध घंटा से ज़्यादा अरसा तक चलता रहा। प्रश्न इस्लाम के बार में द्वेष, सोशल मीडिया का रवैय्या और धर्म से दूरी का सबब, इस्लाम में महिला का स्थान और महिला के हुक़ूक़ पर आधारित थे।

एक महिला विद्यार्थी ने प्रश्न किया कि क्या कारण है कि क्रोशिया में मुस्लमानों की संख्या बहुत कम है और इस्लाम की ओर ध्यान भी बहुत कम है।

इस प्रश्न के उत्तर में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

इस का एक बड़ी कारण चरमपंथी है और इस्लाम की सही और सच्ची शिक्षाओं को भुला देना है और मुस्लमानों की यह हालत होना कोई नई चीज़ नहीं है क्योंकि इस ज़माना के सम्बन्ध में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने भविष्यवाणी फ़रमाई थी और ऐसा होना ही था। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया था कि इस्लाम पर एक ऐसा ज़माना आने वाला है कि जब इस्लाम का नाम लेने वाले, इस्लाम की शिक्षाओं को भुला देंगे और मुस्लमान नाम का रह जाएगा। मस्जिदें आबाद तो होंगी परन्तु हिदायत से ख़ाली होंगी। शब्दों के अतिरिक्त क़ुरआन का कुछ बाक़ी नहीं रहेगा। उनके उल्मा आसमान के नीचे बसने वाली मख़लूक़ में से

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 103 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

Tahir Ahmad Zaheer
M.Sc. (Chemistry) B.Ed.
DIRECTOR
طالب دعا
Tahir Ahmad Zaheer
Director oxford N.T.T.College
Jaipur (Rajasthan)
TEACHER TRAINING
OXFORD N.T.T. COLLEGE
(Teacher Training)
(A unit of Oxford Group of Education)
Affialiated by A.I.I.C.C.E. New Delhi 110001
0141-2615111- 7357615111
oxfordnttcollege@gmail.com
Add. Fateh Tiba Adarsh Nagar, Jaipur-04
Reg. No. AllCCE-0289/Raj.

बदतरीन मख़लूक़ होंगे। अर्थात समस्त ख़राबियों का स्रोत होंगे। तब एक रीफ़ारमर, एक मुस्लेह आएगा जो सबको इकट्ठा करेगा, सब धर्मों को एक हाथ पर जमा करेगा और इस्लाम की सच्ची और हक़ीक़ी शिक्षा का संदेश फैलाएगा। सबको उख़ुवत और मुहब्बत में पिरोएगा।

इसलिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की भविष्यवाणी के अनुसार हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अवतरित हुए। आप मसीह अलैहिस्सलाम और मह्दी अलैहिस्सलाम बन आए। 1889 ई. में जमाअत अहमदिया का क़ियाम अनुकरण में आया।

जब आपने मसीह और मह्दी होने का दावा किया तो सबने झुठलाया और हमने स्वीकार किया। आज हम ही वह लोग हैं जिन्हों ने इस काम का बीड़ा उठाया है कि इस्लाम का सही संदेश संसार में फैलाया। इस कारण से आप देखते हैं कि हमारा अनुकरण दूसरे मुस्लमानों से विभिन्न है। जो दूसरे मुस्लमान हैं उनके आमाल आपके सामने हैं। मुस्लमान देशों में उनका जो आचरण है वह भी सब के सामने है। मुस्लमान मुल्कों के हुक्काम, लीडर्ज़ इस्लाम की असल और वास्तविक शिक्षाओं को पर अनुकरण नहीं कर रहे। इस्लाम की शिक्षा के अनुसार नहीं चल रहे। जिसके कारण से ये सब देशों परेशानियों और मसायब का शिकार हैं। दूसरी ओर जमाअत अहमदिया प्रतिदिन बढ़ रही है। प्रगति कर रही है। प्रत्येक वर्ष लाखों लोग मुस्लमानों में से और दूसरे धर्मों से अहमदियत में दाख़िल हो रहे हैं और हम निरन्तर बढ़ हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि मुझे आशा है कि इन शा अल्लाह एक दिन हम सबकी ग़लत-फ़हमियाँ दूर कर देंगे और लोग इस्लाम को स्वीकार कर लेंगे।

एक महिला ने प्रश्न किया कि क्या मसीह अलैहिस्सलाम ने आकर मुस्लमानों के दिल बदल दिए हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि बिल्कुल ऐसे ही है। जब आपने मसीह-ओ-मह्दी होने का दावा किया तो आप अकेले थे। जब फ़ौत हुए तो लगभग आधा मिलियन लोग आपके मानने वाले थे और 99.9 प्रतिशत मुस्लमानों में से आए थे। आप अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला के फ़ज़ल से उनके दिल, अनुकरण और आचरण बदल दिए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया हमारी पश्चिमी अफ़्रीक़ा में एक बड़ी कम्यूनिटी है। पूर्व की ओर अफ़्रीक़ा में हमारी जमाअत है। नॉर्थ अमरीका, साऊथ अमरीका, यूरोप फॉर ईस्ट देश, इंडोनेशिया, पाकिस्तान, इंडिया में हमारी कम्यूनिटी की संख्या बहुत बड़ी है। सारी दुनियामें फैली हुई इस कम्यूनिटी का अख़लाक़, आचरण और अनुकरण एक जैसा ही है। अतः अहमदिया कम्यूनिटी ही है जो इस्लाम की सही शिक्षा पर कार्यरत है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया क़ुरआन-ए-करीम सब के लिए है। अब यह एक ही पुस्तक है परन्तु इसके मानने वालों के अनुकरण में अंतर है। मुल्लाओं ने इस की शिक्षाओं को बिगाड़ दिया है जबकि हम अहमदी उसकी असल और वास्तविक शिक्षाओं को पर अनुकरण कर रहे हैं।

एक मेहमान ने प्रश्न किया कि आजकल के नौजवान किसी भी धर्म को स्वीकार करना नहीं चाहते।

इसके उत्तर में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि आप अहमदी नौजवानों में ऐसा नहीं देखेंगे। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि लोग धर्म के बारे में बद-दिल हो गए हैं और ख़ुदा के व्यक्तित्व के क़ायल नहीं हैं। परन्तु इसके अतिरिक्त बहुत से लोग ख़ुदा के व्यक्तित्व और धर्म की आवश्यकता के क़ायल भी हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि दूसरा यह कि सईद फ़ितरत लोग जब अहमदियों का अनुकरण देखते हैं और इस्लाम की सच्ची और हक़ीक़ी शिक्षा देखते हैं तो इन बातों का उन पर-असर होता है और इस तरह बहुत से नौजवान बड़ी संख्या में हमारे साथ शामिल हो रहे हैं।

धर्म और विज्ञान में तज़ादात के बारे में पूछे गए एक प्रश्न पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि

विज्ञान और क़ुरआन-ए-करीम में कोई तज़ाद नहीं है। क़ुरआन-ए-करीम कहता है कि Big Bang की थियूरी ठीक है। ब्लैक होल उपस्थित है। क़ुरआन-ए-करीम में बताया गया है कि किस तरह हमारी ज़मीन, हमारी कायनात व्यक्तित्व में आई।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने डाक्टर अब्दुल सलाम साहब का वर्णन फ़रमाया कि आप कहा करते थे कि क़ुरआन में सात सौ आयात हैं जिनका सम्बन्ध बिलवासता या बिलाबास्ता विज्ञान से है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने न्यूज़ीलैंड के कलीमनट रेग (Clement Wragge) का वर्णन करते हुए फ़रमाया कि उन्होंने हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के जीवन के आख़िर वर्ष मई 1908 ई. में लाहौर में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से मुलाक़ात की थी और आप अलैहिस्सलाम से विज्ञान और क़ुरआन-ए-करीम के हवाला से विभिन्न प्रश्न किए थे कि क्या उनमें तज़ाद उपस्थित है? इस लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उनके प्रश्न के उत्तर प्रदान फ़रमाए थे कि दोनों में कोई तज़ाद नहीं है। इस लिए केलीमनट रेग साहब पूरी तरह संतुष्ट हुए और फिर उन्होंने अहमदियत भी स्वीकार की।

प्रश्न : मर्दों और महिलाओं के हुक़ूक़ और बराबरी के हवाला से होने वाले प्रश्न पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि क़ुरआन-ए-करीम हियूमन राईट्स क़ायम करता है। विरासत का हक़ देता है। इस्लाम ने तो अपने आरंभ से अर्थात 14 सो वर्षों से ही यह विरासत का हक़ दिया हुआ है और इस तरह तलाक़ का हक़ अलैहदगी का हक़ दिया हुआ है। परन्तु यूरोप ने कुछ सौ वर्ष पूर्व तलाक़ का हक़ दिया है।

इस्लाम पुरुष और महिला को रोज़मर्रा के हुक़ूक़ बराबर देता है। अब संसार में महिलाओं की संख्या मर्दों की निसबत ज़्यादा है । अब बताएं कि संसार में कितने देशों हैं जहां महिलाए सदर या प्रधान मंत्री हैं? इस का अर्थ है कि आप महिलाओं को उनका हक़ नहीं दे रहे। बराबरी का हक़ नहीं दे रहे। जबकि इस्लाम पुरुष और महिलाओं दोनों को उनके हुक़ूक़ देता है और दोनों के कर्तव्य बताता है

महिलाएं शिक्षा भी प्राप्त करती हैं और बाहर काम भी कर सकती हैं परन्तु यदि पुरुष अच्छा कमाने वाला हो तो महिलाओं की सबसे बेहतर ज़िम्मेदारी यह है कि वह घर सँभाले और बच्चों को सँभाले। इस लिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जन्नत माँ के क़दमों तले हैं। क्योंकि महिला बच्चों की तर्बीयत करती है और सोसाइटी के लिए मुफ़ीद व्यक्तित्व बनाती है जो हुकूमत की और क़ौम की प्रगति का मूजिब बनते हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की एक हदीस का वर्णन करते हुए फ़रमाया कि जिस व्यक्ति की तीन बेटियां हों और वह उनकी बेहतरीन तर्बीयत करे तो वह जन्नत में जाएगा

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि हम जो मानते हैं इस पर अनुकरण भी करते हैं जबकि दूसरे लोग जो मानते हैं उस पर अनुकरण नहीं करते।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि जमाअत अहमदिया के दूसरे ख़लीफ़ा ने महिलाओं के लिए एक अलग आर्गेनाईज़ेशन बनाई कि यदि पुरुष अपने दीनी कर्तव्य और ज़िम्मेदारी अदा न करें तो फिर महिलाए यह काम करें क्योंकि हम चाहते हैं कि महिलाए मर्दों से ज़्यादा प्रगति करें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि यदि एक दरख़्त के बिल्कुल साथ ही छोटा पौधा लगाऐं तो इस की Groth नहीं होती। परन्तु यदि वही दरख़्त खुली जगह पर लगाया जाए तो वह बहुत फलता फूलता है। बिल्कुल इसी तरह महिलाओं की भी अलग-अलग आर्गेनाईज़ेशन बनाई गई ताकि वह प्रगति करें।

विद्यार्थियों ने इस बात का बरमला प्रकटन किया कि उनकी ओर से उठाए गए प्रश्न का हुज़ूर अनवर ने बहुत ही प्यारे ढंग में बड़ी तफ़सील के साथ उत्तर दिया और उनकी पूरी तरह तसल्ली हो गई।

मुलाक़ात के बाद दल के शुरका ने बार-बार इज़हार-ए-मुसर्रत किया कि हुज़ूर अनवर ने अतिरिक्त इतनी व्यस्तता के उन्हें शरफ़-ए-मुलाक़ात बख़्शा और उनकी ओर से पूछी गई समस्त बातों का बड़े ही मुदब्बिराना ढंग में उत्तर दिया।

दल के लोग ने इस बात का बरमला प्रकटन किया कि मुलाक़ात में हुज़ूर अनवर के तरीक़ इस्तिदलाल और समस्त नुकात को बारीकबीनी और मिसालों के साथ समझाने के ढंग ने हमें बहुत प्रभावित किया है।

विभाग खेती बाड़ी से सम्बन्ध रखने वाले एक मित्र ने कहा कि यह मेरे लिए बहुत बड़े सम्मान की बात है कि मैंने ख़लीफतुल मसीह से मुलाक़ात की। मुलाक़ात से पूर्व हमें इस बात का अनुमान नहीं था कि ख़लीफ़ा का स्थान जमाअत अहमदिया में क्या है। जलसा में शामिल हो कर और अहमदियों से मिलकर और ख़लीफ़ा की तक़ारीर सुनकर अनुमान हुआ और आपके बुलंद स्थान की समझ प्राप्त हुई। जब हम आपके पास हाज़िर हुए तो कुछ डर था परन्तु वह डर जल्द ही मुहब्बत और इज़्ज़त में तबदील हो गया। ख़लीफ़ा के शब्दों से हम सबने अपने सीनों में एक तरह की हरारत महसूस की। अब हम इस्लाम को एक और तरह से देख रहे हैं। इस्लाम के बारे में हमारा नज़रिया बिल्कुल बदल गया है।

शेष आगे....

★ ★ ★

जब बच्चे 14 या 15 साल की आयु में पहुंचते हैं तो उमूमन उनकी तर्जीहात बदलने लगती हैं और मज़हबी और जमाअती सरगर्मियों में सुस्ती दिखाने लगते हैं उनकी दिलचस्पी अन्य कर्यों में बढ़ने लगती है

यह बहुत हस्सास वक़्त होता है और ऐसी आयु होती है जहां आपको उन्हें अपने क़रीब रखना चाहिए, उन्हें दीन के साथ जोड़ कर रखें और जमाअती सरगर्मियों में मशग़ूल रखें

नैशनल मज्लिस आमला और लोकल कयाद की मज्लिस खुद्दामुल अहमदिया मारीशस की हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ आन लाइन मुलाक़ात

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 27 फरवरी 2021 ई. को अराकीन नैशनल आमला मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया मारीशस तथा लोकल क़ायदीन मजालिस को ऑनलाइन मुलाक़ात के शरफ़ से नवाज़ा। हुज़ूर अनवर इस मुलाक़ात के लिए अपने दफ़्तर इस्लामाबाद (तिल्फोर्ड) से रौनक अफ़रोज़ हुए जबकि मैंबरान आमिला ने दारुल सलाम मस्जिद rose hill (हैड क्वार्टर्ज़ अहमदिया मुस्लिम जमाअत मारीशस) से ऑनलाइन शिरकत की 60 मिनट पर मुहीत इस मुलाक़ात का आग़ाज़ तिलावत क़ुरआन-ए-करीम से हुआ। जिसके बाद जुमला अराकीन आमिला को अपने विभाग की रिपोर्टस पेश करके आइन्दा की मुजव्वज़ा प्लैनिंग वर्णन करने का अवसर मिला।

मुहतमिम तर्बीयत से मुख़ातब हो कर हुज़ूर अनवर ने नौजवानों को बुनियादी इस्लामी शआर की एहमीयत की तरफ़ तवज्जा दिलाते हुए फ़रमाया कि नौजवानों को नमाज़ की एहमीयत के बारे में बताएं। पांचो समय की नमाज़ों की अदायगी के बारे में जो हर मुस्लमान पर फ़र्ज़ है। उन्हें उनकी महत्तवता क़ुरआन की आयात, अहादीस और हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इर्शादात के हवालाजात से बताएं। तथा ख़ुलफ़ाए अहमदियत ने ख़ुद्दाम को जो हिदायात इस हवाला से वर्णन फ़रमाई हैं, वे भी शामिल करें। यूं सिर्फ एक अशरा तर्बीयत मना लेने से कोई ख़ास फ़र्क़ नहीं पड़ेगा, (ख़ुद्दाम) चंद दिन नमाज़ पढ़ेंगे और फिर वैसे ही हो जाऐंगे। हर नौजवान को ज़ाती हैसियत में नमाज़ों की एहमियत का इदराक होना चाहिए। इस हवाले से मैंबरान आमिला को अपना नमूना पेश करना चाहिए। जब तक आप अपना नमूना पेश नहीं करेंगे लोग आपकी हिदायात पर अमल नहीं करेंगे।

दौरान-ए-मुलाक़ात हुज़ूर अनवर ने मजलिस इतफ़ालुल अहमदिया के मयार कबीर के अतफ़ाल की सही तरीक़ पर तर्बीयत के हवाला से ज़ोर दिया। मुहतमिम अतफ़ाल से मुख़ातब हो कर हुज़ूर अनवर ने इन अतफ़ाल के अख़लाक़ी और रुहानी मयार के बारे में अपनी आशाओं का इज़हार यूं फ़रमाया कि ऐसी उम्र के बच्चों के लिए आपको ख़ास प्रोग्रामज़ तर्तीब देने चाहिऐं, क्योंकि जब बच्चे इस उम्र में पहुंचते जो 14 या15 साल की है तो उमूमन उनकी तर्जीहात बदलने लगती हैं और मज़हबी और जमाअती सरगर्मियों में सुस्ती दिखाने लगते हैं। उनकी दिलचस्पी दीगर उमूर में बढ़ने लगती है। इस लिए यह बहुत एहमीयत का हामिल और हस्सास वक़्त होता है और अतफ़ाल की उम्र ऐसी होती है जहां आपको उन्हें अपने क़रीब रखना चाहिए। हमेशा उन्हें दीन के साथ जोड़ कर रखें और जमाअती सरगर्मियों में मशग़ूल रखें, जिस क़दर आप उन्हें मसरूफ़ रख सकते हैं।

फिर मुहतमिम साहिब माल से हुज़ूर अनवर अदा अल्लाह तआला ने दरयाफ़त फ़रमाया कि वह ऐसे ख़ुद्दाम से जो अभी कमा नहीं कर रहे कितना चंदा लेते हैं। इस पर उन्होंने बताया कि स्टूडैंट और ऐसे ख़ुद्दाम जो अभी कमा नहीं कर रहे उनसे माहाना 75 रुपय फ़ी ख़ादिम के हिसाब से चंदा लेते हैं। इस पर हुज़ूर अनवर ने वहां की करंसी के मुताबिक़ एक बर्गर और बोतल के टीन की क़ीमत दरयाफ़त फ़रमाई जिस पर उन्होंने बताया कि बर्गर 150 रुपय का और बोतल का टीन 25 रुपय का है। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि फिर 75 रुपय माहाना ठीक है। फिर हुज़ूर अनवर ने हिदायत फ़रमाई कि ऐसे ख़ुद्दाम जो कुछ भी नहीं कमा रहे और उन्हें जेब ख़र्च भी ज़्यादा नहीं मिलता। इस बात का ख़्याल रखें कि उन पर ज़्यादा बोझ न पड़े।

मुलाक़ात के इख़तेताम पर एक मर्तबा फिर अतफ़ाल के हवाला से एक मैंबर ने सवाल किया जिस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि जहां तक अतफ़ाल का ताल्लुक़ है तो मैंने मुहतमिम साहिब अतफ़ाल को इस हवाला से तफ़सील से बता दिया है कि 14 से 15 साल की उम्र में उन्हें ख़ास तवज्जा की ज़रूरत होती है। यह एक निहायत हस्सास उम्र है और जब वे ख़ुद्दाम अहमदियत में दाख़िल होते हैं तो वे ख़ुद को बहुत बड़ा समझने लगते हैं। इसी लिए 12 से 13 साल की उम्र में वे अतफ़ाल और ख़ुद्दाम के प्रोग्रामज़ में भरपूर दिलचस्पी लेते हैं परन्तु 14 साल की उम्र को पहुंचते ही वे अपने आपको जमाअती प्रोग्रामों से दूर करने लगते हैं। और 15 साल की उम्र को पहुंचते ही वे ख़ुद को काफ़ी बड़ा समझने लगते हैं कि वह अब अपने फ़ैसले ख़ुद कर सकते हैं। फिर ख़ुद्दामुल अहमदिया में आते ही वे ख़ुद को बहुत बड़ा समझने लगते हैं और18 साल के होते ही वे ख़ुद को मुकम्मल तौर बालिग़ समझते हैं और क़ानून भी उन्हें इजाज़त देता है कि जो चाहें करें। इस उम्र में आपको उनके लिए ख़ास प्रोग्रामज़ तर्तीब देने होंगे और उन्हें जमाअत से मुंसलिक करने और रखने की कोशिश करनी होगी। उनकी दिलचस्पी के प्रोग्रामज़ बनाने पड़ेंगे। उन्हें ख़ुद्दामुल अहमदिया की सरगर्मियों में शामिल रखने के लिए मुख़्तलिफ़ रास्ते और ज़राए तलाश करने होंगे। उनसे पूछें कि वे किस किस्म की सरगर्मियों को पसंद करते हैं और इस के मुताबिक़ अतफ़ालुल अहमदिया और ख़ुद्दाम के प्रोग्रामज़ तर्तीब दें। महिज़ रस्मी किस्म के प्रोग्रामज़ की पैरवी न करें बल्कि नए-नए प्रोग्राम तलाश करें। अतफ़ाल और ख़ुद्दाम को एक सवालनामा दें कि हम अपनी सरगर्मियों को किस तरह बेहतर कर सकते हैं। फिर अगर उनकी तजावीज़ जमाअती वसायल और रिवायात के अंदर रहते हुए काबले अमल हों तो फिर उनके मुताबिक़ आप अपने प्रोग्राम बना सकते हैं। इस तरह आप ख़ुद्दाम और अतफ़ाल की एक बड़ी संख्या को जमाअती सरगर्मियों में शामिल कर सकते हैं। जिस क़दर ख़ुद्दाम और अतफ़ाल को आप जमाअती सरगर्मियों में शामिल करेंगे उतना ही आप जमाअत के लिए मुफ़ीद असासा तैयार कर रहे होंगे। इस तरह उनको भी ख़्याल आएगा कि ज़रूर उनकी भी कुछ एहमीयत है जिसकी वजह से उनसे पूछा गया है कि वे कौन सी सरगर्मियों को पसंद करते हैं। यूं 14 से 15 साल के अतफ़ाल से भी पूछें और फिर जब वे16-17 और 18 साल की उम्र में पहुंचें तो दुबारा उनसे उनकी पसंद की सरगर्मियों के बारे में पूछें। इस बात का भी ख़्याल रखें कि ख़ुद्दाम ज़रूर किसी न किसी खेल में मशग़ूल हों, सिर्फ़ गलीयों में ही न फिरते रहें और महज़ indoor और इंटरनैट की खेलें ही न खेलते रहें। उनको कुछ वरज़शी खेलों में हिस्सा लेना चाहिए, बाहर निकलना चाहिए और ग्राऊंडज़ में जाने का वक़्त मुख़तस करना चाहिए जिस में वे फूटबाल या रगबी या क्रिकेट या बैडमिंटन या टेबल टेनिस या जो भी वे पसंद करें, खेलें। सिर्फ टीवी और वीडीयो गेम्ज़ पर ही अपना वक़्त न ज़ाए करते रहीं।

एक आमिला मैंबर ने सवाल किया कि हुज़ूर अतफ़ाल और ख़ुद्दाम की हाज़िरी नमाज़-ए-जुमा पर बहुत कम होती है जिसकी वजह स्कूल जाना है।

इसके जवाब में हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि यह मसला तो हर जगह है, जब वे स्कूल में होंगे तो जुमा नहीं पढ़ सकेंगे। लेकिन छुट्टियों के दौरान उन्हें जुमा अदा करना चाहिए। यह क्योंकि एक हक़ीक़ी मसला है इसलिए कोशिश करें कि अगर कुछ अतफ़ाल या ख़ुद्दाम स्कूल में इकट्ठे जुमा पढ़ सकते हैं तो पढ़ लें। अगर उसकी इजाज़त है। या स्कूल में सम्पर्क करके पूछें कि अगर वे इन इतफ़ाल या ख़ुद्दाम को कुछ फ़ारिग़ वक़्त दे सकते हैं या ब्रेक दे सकते हैं ताकि वे अपनी क़रीबी मस्जिद में आकर जुमा अदा कर लें। हालात का जायज़ा लेकर देख लें कि आप उनके लिए क्या इंतेज़ाम कर सकते हैं स्कूल से जाने और वापस छोड़ने का। या अगर स्कूल की इंतेज़ामीया इस बात पर रज़ामंद हो जाये उन्हें 12 बजे के बाद स्कूल से छुट्टी दे दी जाए ताकि वे जुमा अदा करलें। यह वालदैन का भी फ़र्ज़ है कि अगर स्कूल की इंतेज़ामिया रज़ामंद हो जाती है कि वे जुमा के दिन आधी छुट्टी कर देंगे तो वालदैन बच्चों को स्कूल से लाने और बरवक़्त जुमा की अदायगी का इंतेज़ाम करें। सबसे पहले स्कूल की इंतेज़ामिया से बात करें और लाज़िमन साथ ही वालदैन को भी इस में शामिल करें। स्कूल की इंतेज़ामिया आपसे पूछ सकती है कि आप कौन होते हैं

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553

Weekly **BADAR** Qadian

Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA

POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 07 Thursday 20 October 2022 Issue No. 42

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com

जुमा के दिन आधी छुट्टी या ब्रेक की बात करने वाले जब तक वालदैन आपके साथ न खड़े हों। इसलिए जमाअत के सैक्रेटरी तर्बीयत, लजना की सैक्रेटरी तर्बीयत, मुहतमिम तर्बीयत और मुहतमिम अतफ़ाल के साथ मिलकर एक मुकम्मल प्रोग्राम बनाएँ कि हम इस मसला को कैसे हल कर सकते हैं। अगर स्कूल की इंतेज़ामिया आपके साथ तआवुन करे और ब्रेक देने पर रज़ामंद हो जाएगी तो बहुत अच्छी बात है। बसूरत-ए-दीगर उसका कुछ नहीं किया जा सकता और आपको कम अज़ कम अतफ़ाल को छुट्टियों में जुमा की अदायगी की तरफ़ भरपूर तवज्जा दिलानी चाहिए कि हर तिफ़्ल ज़रूर जुमा अदा करे।

(धन्यवाद सहित अख़बार इंटरनैशनल 5 अक्तूबर 2021 ई.)

★ ★ ★

अख़बार बदर के अंकों की रक्षा करें

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने की यादगार अख़बार "अख़बार बदर" 1952 ई.से लगातार क़ादियान दारुल अमान से मुद्रित हो रहा है, और जमअत की दीनी ज़रूरतों को पूरा कर रहा है। इस में क़ुरआन-ए-करीम की आयात, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीसे, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मल्-फ़ूज़ात और लेखनी के इलावा सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के ताज़ा ख़ुतबात जुमअः और खिताबात, अध्याम्त्पूर्ण संदेश, ख़ुतबा जुमअः प्रश्न उत्तर के रूप में और हुज़ूर के दौराजात की निहायत ईमान अफ़रोज़ और दीनी और दुनियावी इलम के ख़ज़ानों से भरपूर रिपोर्टस प्रकाशित होती हैं। इनका अध्यन करना, उनको दूसरों तक पहुंचाना, इन पर अमल करना और उनके माध्यम से अपनी और अपने बच्चों की तालीम-और-तर्बीयत करना हम सब का फ़र्ज़ है। इन समस्त उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अख़बार बदर के शुमारों को हिफ़ाज़त के साथ अपने पास सुरक्षित रखना हम सब की महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी है।

दीनी तालीम-ओ-तर्बीयत पर आधारित यह मुक़द्दस अख़बार तक़ाज़ा करता है कि इस का सम्मान किया जाए। इस लिए उसको रद्दी में बेचना यह सम्मान का उल्लंघन करने के समान है। यदि इस को सँभालना सम्भव न हो तो सावधानी के साथ इस को नष्ट करें ताकि इन पवित्र लेखनियों का अपमान न हो। उम्मीद है कि जमआत इस तरफ़ विशेष ध्यान फ़रमाएँ गी और इस से भरपूर लाभ प्राप्त करते हुए इन विषयों को समक्ष रखेंगे।

(सम्पादक)

★ ★ ★

पृष्ठ 01 का शेष

नहीं बल्कि यह आम क़ानून के मुताबिक़ है।

ज़ाहिर है कि औलाद की तकालीफ़ का माँ बाप पर-असर पड़ता है जिस तरह बच्चों के बीमार होने से माँ बाप को तकलीफ़ होती है उसी तरह उनके दोज़ख़ में पड़ने से माँ बाप को तकलीफ़ होगी। इसलिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के विषय में आता है कि क़ियामत के दिन कुछ ज़ाहिर में सहाबी नज़र आने वाले लोगों को दोज़ख़ में जाते देखेंगे तो फ़रमाएंगे اُصَیْحَابِیْ ।اُصَیْحَابِیْ। (भाग 3 किताब तफ़सीर बाब وَ كُنْتُ عَلَيْهِمْ شَهِيْدًا) अतः इस तकलीफ़ से बचाने के लिए अल्लाह तआला बुज़ुर्गों की औलाद से नेकी का सुलूक करता है और उन बुज़ुर्गों को तकलीफ़ से बचाने के लिए उनकी औलाद की हिफ़ाज़त की जाती है जैसे अल्लाह तआला फ़रमाता है कि اَلْحَقْنَا بِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ हम मोमिनों की औलाद को अगर वे मोमिन होंगे जन्नत में उनके साथ मिला देंगे ख़ाह औलाद का दर्जा कम ही क्यों न हो । इस लिए अनबया और सुलाहा की उम्मतों और जमाअतों के लिए बार-बार क़ुरआन-ए-करीम में वादे हैं कि उन पर ख़ास फ़ज़ल होगा ता उनके दुख पाने से अनबया और सुलाहा को तकलीफ़ न हो और चूँकि क़ुरआन-ए-करीम से मालूम होता है कि सब क़ौमों की तरफ़ अम्बिया आए हैं। इस लिए सारी दुनिया ही इस फ़ज़ल में हिस्सादार है और यहूद की विशेषता नहीं:

ثُمَّ اِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِيْنَ عَمِلُوا السُّوْءَ بِجَهَالَةٍ जहालत इलम के मुक़ाबिल का शब्द है और उसके अर्थ न वाक़फ़ीयत के हैं। शब्दकोष में है اَلْجَهَالَةُ ضِدُّ الْعِلْمِ है इसी तरह लिखा اَلْجَهَالَةُ ضِدُّ الْعِلْمِ وَالْمَعْرِفَةِ अर्थात जहालत इलम का वपरीत है और जहालत के माने अदम इलम और अदम-ए-मार्फ़त के हैं इस जगह अदम इलम के माने नहीं क्योंकि जिसे इलम न हो उसे सज़ा नहीं मिलती बल्कि अदम मार्फ़त के हैं यानी इलम तो हुक्म का हो लेकिन तक़्वा में कमज़ोरी की वजह से यह शख़्स वक़्त पर अपने नफ़स को क़ाबू में न रख सके। ऐसा शख़्स सज़ा का मुस्तहिक़ होता है क्योंकि इलम के बाद तक़्वा के हुसूल की कोशिश न करना एक दानिस्ता गुनाह है।

दरहक़ीक़त मार्फ़त ही है जो इन्सान को गुनाह से बचाती है। जो लोग ज़ाहेरी इलम को काफ़ी समझते हैं वे आख़िर गुनाह में मुलव्वस हो कर रहते हैं। अतः में इन्सान को मार्फ़त और ख़शीयत-ए-इलाही में तरक़्क़ी करने की हमेशा कोशिश करनी चाहिए। यह भी याद रखना चाहिए कि जहालत दो किस्म की होती हैं एक दाइमी जिसका शिकार इर्फ़ान से बिल्कुल महरूम होता है और गुनाह में ही उसे सब लज़्ज़त मिलती है। दूसरी वक़्ती। उसका शिकार अदना आरिफ़ भी हो जाता है क्योंकि कई बार उस के इर्फ़ान का दर्जा कम हो जाता है तो उस वक़्त वह नफ़सानी जज़बात का शिकार हो जाता है। इसलिए हदीस शरीफ़ में आता है।

لَا يَزْنِي الزَّانِيْ حِيْنَ يَزْنِيْ وَ هُوَ مُؤْمِنٌ فَيَخْرُجُ مِنْهُ الْاِيْمَان فَيَصِيْرُ عَلٰى رَاْ سِهٖ كَالظُّلَّةِ الخ يعن

अर्थात जब ज़ानी व्यभिचार कर रहा होता है तो उस वक़्त उसके दिल की हालत मोमिनो वाली नहीं होती और उसका ईमान उसके दिल से निकल कर उसके सिर पर छाते की तरह मंडलाता रहता है। (तिरमेज़ी अब्वाबुल ईमान)

وَاَصْلَحُوْا अपनी इस्लाह कर लें या दूसरों की इस्लाह करें दोनों ही माने हो सकते हैं । इस में यह बताया गया है कि गुनाह के बाद इन्सान को केवल कलबी तौबा ही नहीं करनी चाहिए बल्कि जिन कारणों से वे गुनाह सरज़द हुआ था उनको भी दूर करना चाहिए। ताकि आइन्दा गुनाह सरज़द न हो सके। और "दूसरों की इस्लाह करें" से इस तरफ़ इशारा है कि अपने गुनाह के कफ़्फ़ारा के तौर पर उन्हें दूसरे लोगों की इस्लाह करनी चाहिए ताकि उनके सवाब में जिनको वे हिदायत की तरफ़ लाए हों शामिल हो जाएं और साबिक़ गुनाह की वजह से जो आमाल में कमी हो जाए पूरी हो जाए।

(तफ़सीर-ए-कबीर, भाग 4 पृष्ठ 267 प्रकाशन क़ादियान 2010 ई.)

★ ★ ★

CHANDIGARH DIAGNOSTIC LABORATORY
थाने वाला चौक, ठीकरीवाल रोड, नज़दीक केनरा बैंक, पंजाब एंड सिंध बैंक क़ादियान
सभी प्रकार के शारीरिक टैस्ट (ख़ून, मल,बलग़म इत्यादि) कंप्यूटरराइज्ड तरीके से उपलब्ध हैं।
हमारे सहभागी :- SRL (SUPER RANBAXY LABORATORIES), THYROCARE MUMBAI.
चौधरी ख़िज़र बाजवा दरवेश क़ादियान, लुक़मान अहमद बाजवा
और जानकारी के लिए संपर्क करें :- इमरान अहमद बाजवा, रिज़वान अहमद बाजवा
फ़ोन नंबर :-+91-9646561639,+91-8557901648

HUSSAIN CONSTRUCTIONS & REAL ESTATE
(SINCE 1964)
क़ादियान में घर, फ्लैट्स और बिल्डिंग उचित कीमत पर निर्माण करवाने के लिए सम्पर्क करें, इसी प्रकार क़ादियान में उचित कीमत पर बने बनाए नए और पुराने घर / फ्लैट्स और ज़मीन ख़रीदने और Renovation के लिए सम्पर्क करें
(PROP: TAHIR AHMAD ASIF)
contact no. : 87279-41071, 83603-14884, 75298-44681
e mail : hussainconstructionsqadian@gmail.com
HUSSAIN CONSTRUCTIONS & REAL ESTATE

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad